वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

जून (16-30), 2024

हिन्दू विश्व

हिंदू धर्म रक्षिणी एवं मंदिरों की उद्धारिका

अहिल्याबाई होल्कर

कुमटा, कारवार जिला (उत्तर कर्नाटक) में कर्नाटक राज्य के
10 दिवसीय परिषद शिक्षा वर्ग को सम्बोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

इन्दौर में अ.भा. सेवा प्रमुख अजय पारिख जी की उपस्थिति में विहिप सेवा विभाग ने रोगी वाहन का लोकार्पण किया

जलगाँव में पुण्यश्लोका अहिल्या देवी होल्कर के
300वें त्रिशताब्दी समारोह को सम्बोधित करते विहिप के सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपाण्डे

सिडनी में जेट (जीयर एजुकेशनल ट्रस्ट) ऑस्ट्रेलिया फाउंडेशन ने 10वें वार्षिक HOTA फोरम की मेजबानी की

हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

तेजस्विता के उत्पन्नकर्ता, शीघ्रता से अतिवेगपूर्ण प्रहारक, शत्रुओं को पराक्रम से कम्पायमान करने वाले, अनेक कर्मों के निर्वाहक, अस्त्र-शस्त्रधारी, सरल और धर्ममार्ग के प्रेरक सोमदेव सम्पूर्ण विस्तृत वनों में संव्याप्त होकर उन्हें (इन्द्रदेव को) संवर्द्धित करते हैं। कोई भी प्रतिमान इन्द्रदेव की समानता नहीं कर सकते।
– ऋग्वेद

16-30 जून, 2024
ज्येष्ठ शुक्ल - आषाढ़ कृष्ण पक्ष
पिंगल संवत्सर
वि. सं. - 2081, युगाब्द- 5126

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार,
रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए	$ 75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित	
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

@eHinduVishwa
@eHinduVishwa
@eHinduVishwa
कुल पेज - 28

जीवन प्रबंधन की पाठशाला पुण्यश्लोका लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर	08
नारी विरोधी नैरटिव की सच्चाई	10
क्यों बार-बार हिन्दू आस्था पर होते हैं हमले : विनायक राव'	11
हमारी अस्मिता हिन्दू है	12
दादागिरी की पराकाष्ठा है सीएम हाउस में अपनी ही महिला सांसद पर लात-घूसे चलाना	15
पीओके हाथ से निकल जाने के डर से सहमा पाकिस्तान	16
निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन	18
हिंदू संस्कृति में गुड़ का महत्व और औषधिय लाभ	20
गोंद कतीरा के गुण	22
हिन्दू समाज पर हो रहा आक्रमण	23
विश्व हिन्दू परिषद की युवा शाखा बजरंग दल का शौर्य प्रशिक्षण वर्ग	24
.....संगठित हिन्दू संकल्प शक्ति से बनेगा अखण्ड भारत : गजेन्द्र जी	26

सुभाषित

यदि सन्ति गुणाः पुंसां, विकसन्त्येव ते स्वयम्,
न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते।

कस्तूरी की गन्ध को सिद्ध नहीं करना पड़ता, वह तो स्वयं फैलकर अपनी सुगन्ध से वातावरण को सुवासित कर देती है। उसी प्रकार गुणवान् तथा प्रतिभावान मनुष्य के गुण अपने आप फैल जाते हैं, उनका प्रचार नहीं करना पड़ता।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

हिन्दू द्रोहियों का देशभर में विरोध हो

भारत स्वभाव से पंथनिरपेक्ष है, 2024 के लोकसभा चुनावों में छद्म पंथनिरपेक्षतावादी दलों द्वारा लोकसभा चुनावों में हिन्दू समाज को विखंडित करने के लिए सामुहिक आक्रमण किया गया है। इनके द्वारा संविधान में वर्णित मौलिक अधिकारों पर कुठाराघात हुआ है। देश का कोई भी व्यक्ति या संगठन, देश के किसी भी नागरिक या नागरिक समूहों के खिलाफ रंग, कद, जाति, भाषा, क्षेत्र, लिंग, अवस्था इत्यादि के आधार पर भेदभाव नहीं कर सकता, या भेदभाव करने वाले भाषण या बयान नहीं दे सकता। इसी संवैधानिक व्यवस्था के आलोक में न्यायालय ने डीएमके के मंत्री उदयनिधि स्टालिन को डांट लगाई और कहा कि आप धार्मिक आधार पर भेदभाव करने वाले बयान नहीं दे सकते। सर्वोच्च न्यायालय ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और धार्मिक स्वतंत्रता के मौलिक अधिकारों के दुरूपयोग की बात कहकर उदयनिधि को डांट लगाई थी।

बात केवल उदयनिधि के बयानों की नहीं है, मूल बात यह है कि क्या हिन्दू समाज राजनीतिक लोगों के लिए सॉफ्ट टार्गेट है। क्या कोई भी हिंदुओं के खिलाफ कुछ भी बोलने के लिए स्वतंत्र है? क्या हिन्दू समाज के लोगों को संविधान द्वारा कोई भी सुरक्षा नहीं दी गई है? क्या मौलिक अधिकार हिंदुओं के हितों की रक्षा नहीं करते हैं? क्या जनता के लिए बनाए गई शासकीय व्यवस्था और कानून व्यवस्था हिन्दू समाज के लिए नहीं है? क्या राजनेताओं के अनर्गल बयानों पर अंकुश लगाने की कोई व्यवस्था हमारे देश में नहीं है? क्या नेता, विधायक, सांसद और मंत्री हो जाने का अर्थ यह है कि आप कुछ भी बोल सकते हैं, जनता का अपमान कर सकते हैं, संविधान को धत्ता बता सकते हैं?

उदयनिधि स्टालिन ने शुरूआत की और सनातन समाज को कोरोना वायरस, डेंगू, मलेरिया कहा था। प्रियंक खरगे ने कहा था कि जो धर्म समान अधिकार नहीं देता है, वह एक बीमारी के समान है। प्रियंका चतुर्वेदी ने भाजपा द्वारा सनातन धर्म का पक्ष लेने के मामले को फर्जी चिंता कहते हुए इसे पाखंड की संज्ञा दी। स्वामी प्रसाद मौर्या ने कहा था कि भाजपा सनातन शब्द की मार्केटिंग कर रही है। चुनावों की आहट पाते ही हिन्दू विरोधी बयानबाजी शुरू हो जाती है और हिंदुओं का व्यापक अपमान किया जाता है, हिन्दू देवी–देवताओं के विरूद्ध टिप्पणी की जाती है। बार बार हिंदू विरोधी बयान देकर हिंदू द्वेषी तथा देश विरोधी लोगों को एकजुट किया जाता है, ऐसे प्रयत्न ये लोग पहले भी कर रहे थे, किन्तु इसबार यह क्षद्म पंथनिरपेक्ष कुनबा खुलकर सामने आ गया था। इसबार यह हिन्दू विरोधी खेमा हिन्दू समाज के खिलाफ खुलकर खड़ा दिखाई दिया।

खुलकर हिन्दू विरोध तो किया ही गया है, साथ ही आतंकियों का पक्ष लेने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी गई। यूएपीए नामक आतंक विरोधी कानून जो यूपीए की सरकार ने बनाया था, उसे हटाने का वादा भी किया गया था। 2004 में पोटा–टाडा हटाने का वादा कर के कॉंग्रेस सत्ता में आई थी। इसबार उसी अनुरूप यूएपीए हटाने का वादा कर के कॉंग्रेस 50 से 99 पर आई है। आतंकियों का साथ देना और हिंदुओं का अपमान करना, क्या यह संविधान सम्मत है? क्या देश की संप्रभुता को चुनौती देने वाले माओवादियों और जिहादी आतंकियों को राजनीतिक समर्थन मिलना चाहिए, क्या ऐसे मति वाले नेताओं, माफियाओं, गुंडों, अराजक तत्वों का साथ देने वालों का पूर्ण बहिष्कार नहीं होना चाहिए? हिन्दू द्रोही लोग प्रायः देशद्रोहियों के पक्ष में खड़े दिखाई देते हैं। इस पुरे कुनबे का देशभर में विरोध होना चाहिए।

क्या हिन्दू समाज राजनीतिक लोगों के लिए सॉफ्ट टार्गेट है। क्या कोई भी हिंदुओं के खिलाफ कुछ भी बोलने के लिए स्वतंत्र है? क्या हिन्दू समाज के लोगों को संविधान द्वारा कोई भी सुरक्षा नहीं दी गई है? क्या मौलिक अधिकार हिंदुओं के हितों की रक्षा नहीं करते हैं? क्या जनता के लिए बनाए गई शासकीय व्यवस्था और कानून व्यवस्था हिन्दू समाज के लिए नहीं है? क्या राजनेताओं के अनर्गल बयानों पर अंकुश लगाने की कोई व्यवस्था हमारे देश में नहीं है? क्या नेता, विधायक, सांसद और मंत्री हो जाने का अर्थ यह है कि आप कुछ भी बोल सकते हैं, जनता का अपमान कर सकते हैं, संविधान को धत्ता बता सकते हैं?

सैंकड़ों मंदिरों का जीर्णोद्धार कराने वाली महारानी थी अहिल्या बाई होलकर

प्रहलाद सबनानी

अरब देशों से भारत आए आक्रांता शुरू में तो भारत में केवल लूट खसोट करने के उद्देश्य से ही आए थे, क्योंकि उन्होंने सुन रखा था कि भारत सोने की चिड़ियाँ है एवं यहाँ के नागरिकों के पास स्वर्ण के अपार भंडार मौजूद हैं। परंतु यहाँ आकर छोटे–छोटे राज्यों में आपसी तालमेल एवं संगठन का अभाव देखकर, उनका मन ललचाया और उन्होंने यहीं के राजाओं में आपसी फूट डालकर, उन्हें आपस में लड़वाकर, अपने राज्य को स्थापित करने का प्रयास प्रारम्भ किया। अन्यथा आक्रांता तो सँख्या में बहुत कम ही थे, उनका साथ दिया भारत के ही छोटे–छोटे राज्यों ने। भारत के कुछ राज्यों पर अपनी सत्ता स्थापित करने के बाद तो आक्रांताओं की हिम्मत बढ़ गई और फिर उन्होंने भारत की भोली–भाली जनता पर अपना दबाव बनाना शुरू किया कि या तो वे अपना धर्म परिवर्तित कर इस्लाम मतपंथ को अपना लें, अथवा मरने के लिए तैयार हो जाएँ। कई मुस्लिम राजाओं ने तो हिंदू सनातन सँस्कृति पर भी आघात किया और हजारों की सँख्या में मठ–मंदिरों में तोड़–फोड़ कर इन मठ–मंदिरों को भारी नुक्सान पहुँचाया। हिंदू सनातन सँस्कृति पर कायम भारतीय जनता, आक्रांताओं के जुल्म, वर्ष 712 ईसवी से लेकर 1750 ईसवी तक, लगभग 1000 वर्षों तक झेलती रही। लाखों मंदिरों के साथ ही मथुरा, वाराणसी, अयोध्या, सोमनाथ आदि मंदिर, जो हजारों वर्षों से भारतीय जनता की आस्था के केंद्र रहे हैं, इन मंदिरों को भी नहीं छोड़ा गया एवं इन मंदिरों में तोड़फोड़ कर इन मंदिरों पर अथवा इनके पास सटे हुए क्षेत्र में मस्जिद बना दी गई, ताकि हिंदू सनातन सँस्कृति पर सीधे आघात किया जा सके एवं हिंदू सनातन सँस्कृति के अनुयायियों के आत्मबल को तोड़ा जा सके, जिससे वे इस्लाम मतपंथ को अपना लें।

परंतु भारत भूमि पर समय– समय पर कई महान विभूतियों ने भी जन्म लिया है और अपने सदकार्यों से इस पावन धरा को पवित्र किया है। ऐसी ही एक महान विभूति थीं अहिल्या बाई होलकर, जिन्होंने आक्रांताओं द्वारा तोड़े गए एवं नष्ट किए गए मंदिरों के उद्धार का कार्य बहुत बड़े स्तर पर किया था। अहिल्या बाई होलकर का जन्म महाराष्ट्र के अहमदनगर के जामखेड़ स्थित चौंढी गाँव में 31 मई 1725 को हुआ था। उनके पिता का नाम मानकोजी शिंदे था, जो मराठा साम्राज्य में पाटिल के पद पर कार्यरत थे। अहिल्या बाई का विवाह मालवा में होलकर राज्य के संस्थापक मल्हारराव होलकर के पुत्र खंडेराव से हुआ था। वर्ष 1745 में अहिल्या बाई के बेटे मालेराव का जन्म हुआ। इसके करीब 3 साल बाद बेटी मुक्ताबाई ने जन्म लिया। रानी अहिल्या बाई का जीवन संघर्षों से भरा रहा। उनकी शादी के कुछ वर्ष बाद ही 1754 में उनके पति खांडेराव का भरतपुर (राजस्थान) के समीप कुम्हेर में युद्ध के दौरान निधन हो गया। वर्ष 1766 में ससुर मल्हारराव भी

चल बसे। इसी बीच रानी ने अपने एकमात्र बेटे मालेराव को भी खो दिया। अंततः अहिल्या बाई को राज्य का शासन अपने हाथों में लेना पड़ा। अपनों को खोने और शुरुआती जीवन के संघर्ष के बाद भी रानी ने बड़ी कुशलता से राजकाज संभाल लिया। कुशल कूटनीति के दम पर उन्होंने न सिर्फ विरोधियों को पस्त किया, बल्कि जीवनप्रयत्न सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में जुटी रहीं।

अहिल्या बाई ने देशभर में कई प्रसिद्ध तीर्थस्थलों पर मंदिरों, घाटों, कुओं और बावड़ियों का निर्माण कराया। साथ ही उन्होंने सड़कों का निर्माण करवाया, अन्न क्षेत्र खुलवाये, प्याऊ बनवाये और वैदिक शास्त्रों के चिन्तन–मनन व प्रवचन के लिए मन्दिरों में विद्वानों की नियुक्ति भी की। रानी अहिल्या बाई ने बड़ी सँख्या में धार्मिक स्थलों के निर्माण कराए। आपने सोमनाथ के मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया, जिसे 1024 में गजनी के महमूद ने नष्ट कर दिया था। साथ ही सोमनाथ मंदिर के मुख्य मंदिर के आस–पास सिंहद्वार और दालानों का निर्माण करवाया। अहिल्या बाई ने हरिद्वार स्थित कुशावर्त घाट का जीर्णोंधार कराकर, उसे पक्के घाट में परिवर्तित कराया। उन्होंने इसी स्थान के समीप दत्तात्रेय भगवान का मंदिर भी स्थापित कराया। पिंडदान के लिए भी एक उचित स्थान का निर्माण करवाया। वाराणसी में सुप्रसिद्ध मणिकर्णिका घाट का निर्माण करवाया। राजघाट और अस्सी संगम के मध्य विश्वनाथ जी का सुनहरा मंदिर है। यह मंदिर 51 फुट ऊंचा और पत्थर का बना हुआ है। मंदिर के पश्चिम में गुंबजदार जगमोहन और इसके पश्चिम में दंडपाणीश्वर का पूर्व मुखी शिखरदार मंदिर है। इन मंदिरों का निर्माण अहिल्या बाई ने ही करवाया था। वाराणसी में ही अहिल्या बाई होल्कर ने अहिल्या बाई घाट तथा उसके समीप एक बड़ा महल बनवाया। महान संत रामानन्द के घाट के समीप उन्होंने दीपहजारा स्तंभ बनवाया। उन्होंने बहुत से कच्चे घाटों का जीर्णोद्धार कराया, जिसमें से शीतलाघाट प्रमुख है। इस प्राचीन नगर में महारानी ने हनुमान जी

अहिल्या बाई ने देशभर में कई प्रसिद्ध तीर्थस्थलों पर मंदिरों, घाटों, कुओं और बावड़ियों का निर्माण कराया। साथ ही उन्होंने सड़कों का निर्माण करवाया, अन्न क्षेत्र खुलवाये, प्याऊ बनवाये और वैदिक शास्त्रों के चिन्तन–मनन व प्रवचन के लिए मन्दिरों में विद्वानों की नियुक्ति भी की। रानी अहिल्या बाई ने बड़ी सँख्या में धार्मिक स्थलों के निर्माण कराए। आपने सोमनाथ के मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया, जिसे 1024 में गजनी के महमूद ने नष्ट कर दिया था। साथ ही सोमनाथ मंदिर के मुख्य मंदिर के आस–पास सिंहद्वार और दालानों का निर्माण करवाया।

के भी एक मंदिर का निर्माण करवाया। काशी के समीप ही तुलसीघाट के नजदीक लोलार्ककुंड के चारों ओर कीमती पत्थरों से जीर्णोद्धार करवाया। इस कुंड का उल्लेख महाभारत और स्कन्दपुराण में भी मिलता है।

इसी प्रकार बद्रीनाथ और केदारनाथ में भी धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। सन 1818 में कैप्टन स्टुअर्ट नाम का एक व्यक्ति हिमालय की यात्रा पर गया। वहाँ केदारनाथ के मार्ग पर तीन हजार फुट की ऊँचाई पर अहिल्या बाई द्वारा निर्मित एक पक्की धर्मशाला उसने देखी थी। बद्रीनाथ में तीर्थयात्रियों और साधुओं के लिए सदावर्त यानी हमेशा अन्न बांटने का व्रत लिया था। हिंदू धर्म में गंगाजी का व गंगाजल का बड़ा महत्व है। पूरे देश में स्थापित तीर्थस्थान भारत की एकात्मकता व राष्ट्रीयता के परिचायक हैं। भारत के तीर्थों में गंगाजल पहुँचाने की श्रेष्ठ व्यवस्था द्वारा अहिल्या बाई ने धार्मिकता के साथ–साथ राष्ट्रीय एकात्मकता की प्राचीन परंपरा को नवजीवन दिया था।

अयोध्या, उज्जैन और नासिक में भगवान राम के मंदिर का निर्माण किया। उज्जैन में उन्होंने चिंतामणि गणपति के मंदिर का भी निर्माण करवाया। एलोरा, महाराष्ट्र में वर्ष 1780 के आस–पास घृणेश्वर मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया। अहिल्या बाई को महेश्वर बहुत प्रिय था। उन्होंने यहाँ कई प्राचीन मंदिरों, घाटों आदि का जीर्णोद्धार कराया। इसके अलावा कई नये मंदिर, घाट व मकान बनवाए। उन्होंने महेश्वर में अक्षय तृतीया के शुभ दिन घाट पर भगवान परशुराम का मंदिर बनवाया। जगन्नाथपुरी मंदिर को दान और आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम सहित महाराष्ट्र में परली वैजनाथ ज्योतिर्लिंग का भी कायाकल्प करवाया।

आपके शासनकाल में ग्रीष्म ऋतु

में कई स्थानों पर प्याऊ का प्रबंध होता था व ठंड में गरीबों को कंबल बांटे जाते थे। इन सारे कार्यों के लिए कई कर्मचारी नियुक्त थे। आपकी सैन्य प्रतिभा के अनेक प्रमाण अभिलेखों में उपलब्ध हैं। उनकी सफल कूटनीति का साक्ष्य यह है कि विशाल सैन्य बल से सज्ज आक्रमण की नीयत से आए राघोबा को उन्होंने अकेले पालकी में बैठकर उनसे मिलने आने के लिए उसे विवश कर दिया था। डाकुओं और भीलों को उन्होंने समाज की मुख्य धारा में लाने का यत्न किया तथा समाज के उपेक्षित लोगों की सेवा को उन्होंने ईश्वर की सेवा माना। उनकी व्यावसायिक दूरदृष्टि का उदाहरण महेश्वर का वह वस्त्रोद्योग है, जहाँ आज भी सैकड़ों बुनकरों को आजीविका मिलती है तथा यहाँ की साड़ियाँ विश्वप्रसिद्ध हैं। वे अद्भुत दृष्टि सम्पन्न विदुषी थीं। अहिल्या बाई होलकर परम शिव भक्त थी। उनकी राजाज्ञाओं पर 'श्री शंकर आज्ञा' लिखा रहता था। श्री काशीनाथ त्रिवेदी जी कहते है कि 'उनका (अहिल्या बाई) मत था कि सत्ता मेरी नहीं, सम्पत्ति भी मेरी नहीं, जो कुछ है भगवान का है और उसके प्रतिनिधि स्वरूप समाज का है।' इस प्रकार उन्होंने समाज को भगवान का प्रतिनिधि माना और उसी को अपनी समूची सम्पदा सौंप दी। वह अपने समय में ही इतनी श्रद्धास्पद बनीं कि समाज ने उन्हें अवतार मान लिया। 8 मार्च 1787 के 'बंगाल गजट' ने यह लिखा कि देवी अहिल्या की मूर्ति भी सर्व सामान्य द्वारा देवी रूप से प्रतिष्ठित व पूजित की जाएगी।

महारानी अहिल्या बाई की पहचान एक विनम्र एवं उदार शासक के रुप में थी। उनके हृदय में जरूरतमदों, गरीबों और असहाय व्यक्ति के लिए दया और परोपकार की भावना भरी हुई थी। उन्होंने समाज सेवा के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर दिया था। अहिल्या बाई हमेशा अपनी प्रजा और गरीबों की भलाई के बारे में सोचती रहती थी, इसके साथ ही वे गरीबों और निर्धनों की हरसंभव मदद के लिए हमेशा तत्पर रहती थी। उन्होंने समाज में विधवा महिलाओं की स्थिति पर भी खासा काम किया और उनके लिए उस वक्त बनाए गए कानून में बदलाव भी किया था। अहिल्या बाई के मराठा प्रांत का शासन संभालने से पहले यह कानून था कि अगर कोई महिला विधवा हो जाए और उसका पुत्र न हो, तो उसकी पूरी संपत्ति सरकारी खजाना या फिर राजकोष में जमा कर दी जाती थी, लेकिन अहिल्या बाई ने इस कानून को बदलकर विधवा महिला को अपनी पति की संपत्ति लेने का हकदार बनाया। इसके अलावा उन्होंने महिला शिक्षा पर भी खासा जोर दिया। अपने जीवन में तमाम परेशानियाँ झेलने के बाद जिस तरह महारानी अहिल्या बाई ने अपनी अदम्य नारी शक्ति का इस्तेमाल किया था, वो काफी प्रशंसनीय है। अहिल्या बाई कई महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। अहिल्या बाई ने 13 अगस्त 1795 को अपनी अंतिम सांस ली। भले ही वह आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उन्होंने अपने कर्मों से खुद को अमर बना लिया। जिस तरह से वह सभी तरह की कठिनाइयों से गुजरीं, वह आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेंगी।

prahlad.sabnani@gmail.com

विहिप सेवा विभाग ने किया रोगी वाहन का लोकार्पण

इंदौर, 19 मई 2024। विश्व हिंदू परिषद, मालवा प्रान्त, सेवा विभाग द्वारा सेवा, सुरक्षा, संस्कार के भाव को आगे बढ़ाते हुए इंदौर विभाग में एक और सेवा कार्य की शुरुआत की गई। रोगी वाहन (एम्बुलेंस) विहिप सेवा विभाग के द्वारा हिन्दू समाज हेतु प्रारम्भ की गई, जो कि एम. वाय हॉस्पिटल में सेवारत रहेगी। इस रोगी वाहन का लोकार्पण आज 19 मई 2024 को साय 6.30 बजे अजय जी पारिख, केन्द्रीय मंत्री व केन्द्रीय सेवा प्रमुख के करकमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में प्रान्त अध्यक्ष मुकेश जी जैन, सुप्रीम कोर्ट के प्रख्यात अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय, प्रान्त संगठन मंत्री खगेन्द्र जी भार्गव, प्रान्त सेवा प्रमुख गिरिधारी लाल कुमावत उपस्थित रहे।

जीवन प्रबंधन की पाठशाला पुण्यश्लोका लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर

डॉ. माला सिंह ठाकुर
अखिल भारतीय सचिव, लोकमाता
अहिल्याबाई होलकर त्रिशताब्दी समारोह समिति

हम सभी के जीवन में उतार–चढाव आते रहते हैं। मुश्किल समय में भी पूरी दृढ़ता के साथ परिवार और समाज के साथ खड़े रहना, यह आसान नहीं लगता। लेकिन जब हम पूजनीय माँ अहिल्या के जीवन पर दृष्टि डालते हैं, तो जीवन में सभी प्रकार की परिस्थितियों से लड़ने की प्रेरणा मिलती है। तो आइए चलते हैं, जीवन प्रबंधन की पाठशाला की ओर – महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौंड़ी गाँव में 31 मई 1725 को मानको जी शिंदे के यहाँ अहिल्या ने जन्म लिया। माता पिता की लाड़ली बेटी को उस समय जब लड़कियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी, ऐसे समय में पिता ने लिखना–पढ़ना सिखाया। माँ ने बचपन से ही ईश्वर में आस्था और विश्वास के सँस्कार का जागरण किया। पिता गाँव के पाटिल थे और साधारण परिवार से थे। लेकिन नियति ने तय किया था की अहिल्या को लोकमाता देवी अहिल्या बाई होलकर बनना है।

एक दिन पुणे जाते समय चौंड़ी में विश्राम करते वक्त सूबेदार मल्हारराव होलकर की दृष्टि मंदिर में पूजा करने के बाद भूखों को भोजन कराती आठ वर्षीय अहिल्या के सहज, सरल, सँवेदनशील चरित्र पर पड़ी और उन्होंने अपने पुत्र से अहिल्या का विवाह करना तय किया। वर्ष 1733 में विवाह हुआ और तत्पश्चात वे अहिल्या खांडेराव होलकर बन कर अपनी ईश्वर के प्रति आस्था को साथ लिए, होलकर राजघराने आ गई और समय के साथ–साथ विभिन्न परिस्थितियों का सामना कर राज पाठ के गुर भी सीखती गईं।

इसी बीच उन्होंने एक पुत्र मालेराव और तीन वर्ष बाद एक पुत्री मुक्ताबाई को जन्म दिया। समय बीतता गया। बच्चों में भी दया, करुणा, सँवेदनशीलता, प्रेम के सँस्कार का बीजारोपण उन्होंने जारी रखा। सब अच्छा चल रहा था, किंतु

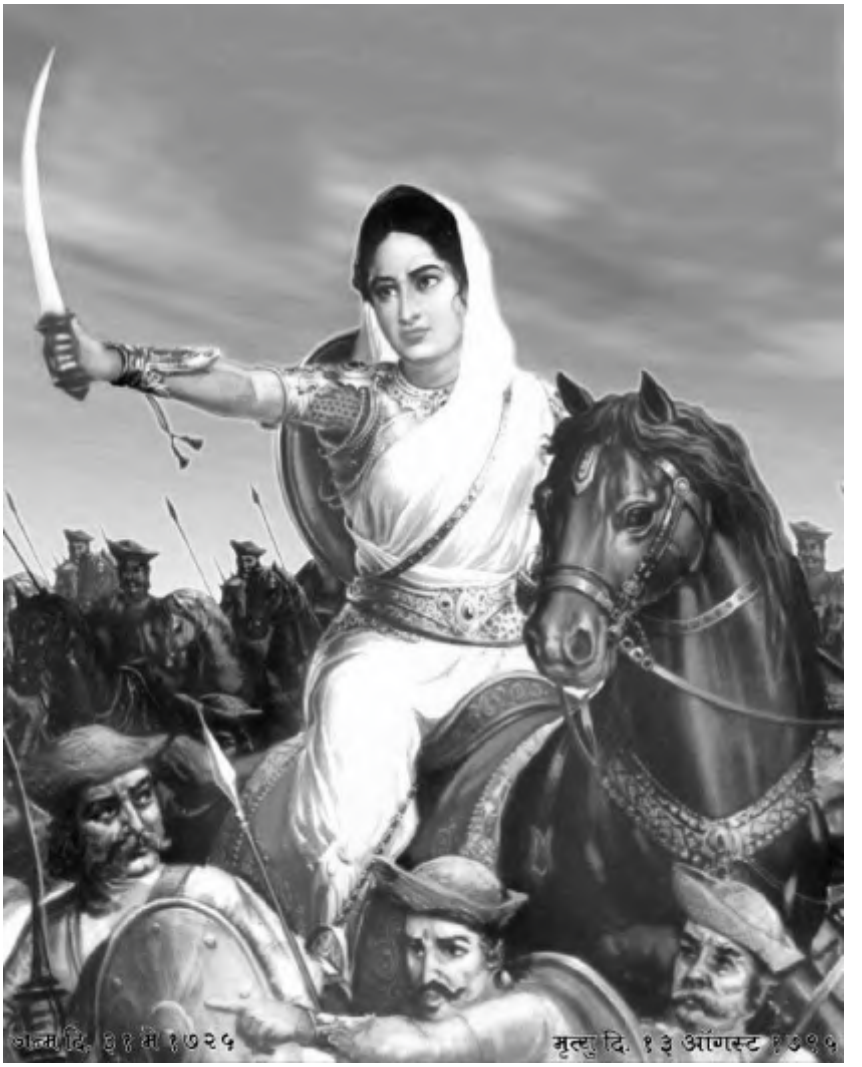

नियति बहुत निष्ठुर है। वर्ष 1754 में कुम्भेर युद्ध के दौरान उनके पति खांडेराव होलकर वीरगति को प्राप्त हो गए। उस समय सती प्रथा जोरों पर थी। अहिल्या बाई के ससुर ने उन्हें सती होने नहीं दिया और अपने साथ राज पाठ चलाना सिखाया। प्रशासनिक फैसले, जिम्मेदारियों का निर्वहन, कूटनीति, राजनीति के बारीक से बारीक दांव पेंच जो आवश्यक थे, वो अहिल्या अपने पिता समान ससुर से सीखती गई।

वर्ष 1766 में ससुर की मृत्यु के पश्चात शासन अहिल्या बाई के नेतृत्व में उनके पुत्र मालेराव ने सँभाला। किंतु विधाता को कुछ और ही मंजूर था। अहिल्या बाई पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा, ससुर के जाने के दुःख से अभी वो उबर भी न पाईं थीं कि मात्र एक वर्ष में ही 1767 में उन्होंने अपने युवा पुत्र को खो दिया। इतना विकट समय जब अपना कोई साथ नहीं, तब मानसिक सँबल, साहस और शौर्य के साथ अहिल्या बाई ने शासन किया। ऐसा शासन जिसकी ख्याति इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित है। भगवान शिवजी के प्रति आस्था, प्रजा के प्रति

ममत्व और राजगद्दी के प्रति कर्तव्यनिष्ठा के भाव ने उन्हें न्यायप्रिया बनाया। समय आने पर अस्त्र–शस्त्र से सज्जित होकर अपनी प्रजा की रक्षा भी की, हाथी पर बैठकर दुश्मनों पर तीर–कमान से हमला करने की छवि उन्हें साहसी और कर्मयोगिनी बनाती है। उन्होंने सदैव अपने राज्य को मुस्लिम आक्रमणकारियों से बचाने का प्रयास करने के साथ ही अँग्रेजों के विरुद्ध पेशवा को आगाह किया, जो उनकी दूरदृष्टिता और कुशल रणनीतिकार होने के साथ–साथ बहुत बेहतर राजनीतिज्ञ होने का परिचायक है।

न्यायप्रिया अहिल्या बाई प्रतिदिन अपनी प्रजा की समस्याएँ व्यक्तिगत तौर पर सुनती और हाथों–हाथ समाधान भी करती थीं। प्रजा को सदैव पुत्रवत स्नेह देने वाली, हर परिस्थिति में सदैव अपनी प्रजा के साथ खड़ी रहने वाली, सदैव प्रजा का हौसला बढ़ाया। अपने अत्यंत प्रिय स्वजनों के न रहने के बाद भी उन्होंने कभी व्यक्तिगत दुःख और विषाद को अपने कर्तव्य के मध्य नहीं आने दिया, जिसने उन्हें माँ अहिल्या बनाया। उनकी मान्यता थी कि प्रजा का सँतति की तरह संभाल ही राजधर्म है। उनके शासन में हर आम–खास के लिए समान प्रकार के नीति–नियम थे। प्रजा अपनी राजमाता से बहुत संतुष्ट थी। इसी कारण कई लोगों के निजामशाही और पेशवाशाही छोड़कर उनके साथ आने के आग्रह के उल्लेख मिलते हैं। अपने छोटे से साम्राज्य में सुशासन के लिए उनके द्वारा किए गए प्रयास, एक शासक से अधिक उन्हें महान व्यक्तित्व बनाते हैं।

उनके शासन में राजाज्ञाओं पर हस्ताक्षर के स्थान पर वह श्री शंकर लिखती थी। रुपयों पर शिवलिंग और बिल्व पत्र का चित्र और पैसों पर नंदी अंकित होते थे। उनका विश्वास था कि इस प्रकार ईश्वर को साक्षी मानकर कार्य करने से कभी किसी का अहित नहीं होगा, अपने छोटे से कार्यकाल में उन्होंने केवल मालवा ही नहीं, अपितु देश में कई धर्म स्थलों पर विश्राम गृह, घाट, कुएँ, बावड़ी, प्याऊ, मंदिर, पुलिया, अन्नक्षेत्र, सड़कें, किले आदि बनवाए। इतिहास कहता है कि भगवान शिवजी के प्रति आस्था ने उन्हें सदैव धर्म सम्मत, धर्म रक्षक और धर्म हितार्थ कार्य हेतु प्रेरित किया। साथ ही मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा तोड़े गए मंदिरों के विषाद के कारण ही उन्होंने सोमनाथ में शिवजी का मंदिर बनवाया। साथ ही काशी, अयोध्या, हरिद्वार, द्वारका, बद्रीनाथ आदि को सँवारने में उनकी बड़ी भूमिका रही। हम प्रत्यक्ष भी विभिन्न प्रदेशों में धर्म स्थलों व उसके आसपास उनके द्वारा लोकहितार्थ कराए गए निर्माणों को देख सकते हैं। जिसने उन्हें लोकमाता बनाया।

उन्होंने अपनी दूरदृष्टि से प्रयासपूर्वक कला, साहित्य, संगीत और उद्योग के द्वार खोले। उन्होंने महेश्वर को अपनी राजधानी बनाया। पवित्र नदी नर्मदा के आसपास कपड़ा उद्योग स्थापित करवाया। बहुत बुद्धिमानी से उन्होंने सरकारी धन लोकहित में लगाने के साथ–साथ अपने राज्य को समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाने हेतु सतत प्रयास किए। आज भी कला–कौशल, हस्तशिल्प, माहेश्वरी साड़ियों और कपड़ों का बाजार फलने–फूलने के साथ ही मालवा की सँस्कृति को भी सँजोए हुए है। 13 अगस्त 1795 को सत्तर वर्ष की उम्र में देवी अहिल्या बाई होलकर ईश्वरीय कार्य करते–करते स्वर्ग सिधार गई। तत्पश्चात शासन उनके अत्यंत विश्वासपात्र तुकोजीराव होलकर ने सँभाला। माँ अहिल्या का चरित्र समाज के लिए कल भी प्रासँगिक था, आज भी उतना ही प्रासँगिक है।

न्यायप्रिया अहिल्या बाई प्रतिदिन अपनी प्रजा की समस्याएँ व्यक्तिगत तौर पर सुनती और हाथों–हाथ समाधान भी करती थीं। प्रजा को सदैव पुत्रवत स्नेह देने वाली, हर परिस्थिति में सदैव अपनी प्रजा के साथ खड़ी रहने वाली, सदैव प्रजा का हौंसला बढ़ाया। अपने अत्यंत प्रिय स्वजनों के न रहने के बाद भी उन्होंने कभी व्यक्तिगत दुःख और विषाद को अपने कर्तव्य के मध्य नहीं आने दिया, जिसने उन्हें माँ अहिल्या बनाया। उनकी मान्यता थी कि प्रजा का संतति की तरह संभाल ही राजधर्म है। उनके शासन में हर आम–खास के लिए समान प्रकार के नीति–नियम थे। प्रजा अपनी राजमाता से बहुत संतुष्ट थी। इसी कारण कई लोगों के निजामशाही और पेशवाशाही छोड़कर उनके साथ आने के आग्रह के उल्लेख मिलते हैं।

माँ अहिल्या के आशीर्वाद और प्रेरणा से आज अहिल्या नगरी इंदौर विश्वविख्यात है और आज अपनी माँ अहिल्या देवी की जयंती के साथ 'इंदौर गौरव दिवस' मना रही है। सेवा, परोपकार, सँवेदनशीलता के सँस्कार को आज भी उसी रूप में मालव माटी में महसूस किया जा सकता है। मध्य प्रदेश की औद्योगिक और साँस्कृतिक राजधानी के रूप में अहिल्या बाई का साम्राज्य आज भी अनवरत प्रगति पथ पर अग्रसर है। 'आज यह लेख माँ अहिल्या की जयंती के साथ उनके पुण्य स्मरण हेतु तो है ही, साथ ही हम सभी के लिए प्रेरणास्पद भी है, माँ अहिल्या के जीवन के प्रत्येक प्रसंग से प्रेरणा लेकर वर्तमान की चुनौतियों का जीवटता के साथ सामना किया जा सकता है। समाज के प्रति संवेदनशीलता, अपनों के प्रति अपनत्व, अक्षम के लिए मदद के हाथ, परिवार के लिए संबल, कर्तव्यों के प्रति निष्ठा, उम्मीदों के साथ दृढ़ संकल्प, वर्तमान में जैसे माँ अहिल्या ने बुद्धिमानी से अर्थ, परमार्थ को सँयोजित किया, परिवार बिखरने पर स्वयं की आंतरिक शक्तियों को संग्रहित कर कर्त्तव्यों का पालन किया, जो पास था, जो साथ था.. उसका संबल और विश्वास बनकर जिम्मेदारियाँ पूर्ण की.. ठीक वैसे ही विपरीत समय में परिवार में आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन हम भी सक्षमता, सबलता और पूरे सामर्थ्य के साथ कर सकते हैं।'

अपनी आंतरिक शक्तियों का संग्रहण कर विपरीत परिस्थितियों का सामना करना थोड़ा मुश्किल जरूर हो सकता है, किंतु नामुमकिन नहीं है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सभी माँ अहिल्या के दिखाए मार्ग से प्रेरणा लेकर, इंदौर गौरव दिवस के अवसर पर शहर के प्रति अपनी जिम्मेदारियों और कर्त्तव्यों को प्राथमिकता में रख वास्तव में गौरव की अनुभूति कराने वाले रचनात्मक कार्यों में संलग्न रहेंगे।

रामस्वरूप

नारी विरोधी नैरटिव की सच्चाई

आज जब पूरा देश भारत (इंदौर – मालवा) की महान शासक पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई की 300वीं जयंती मनाने जा रहा है, तब भारत की महान सभ्यता और सँस्कृति को कमतर दिखाने के इरादे से भारत के इतिहास को लिखने वाले विदेशी इतिहासकार एवं भारत में जन्मे उनके मानस पुत्र वाम–स्यूडो सेक्युलर बिरादरी के इतिहासकारों द्वारा निर्मित एक सरासर झूठ नैरेटिव की बात करना समसामयिक होगा, उन्होंने नैरेटिव (धारणा–विचार–विमर्श) बनाया कि सनातन हिन्दू भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा बड़ी दयनीय रही है, उन्हें दोयम दर्जे का माना गया, उन्हें दबाकर रखा गया, अपनी बात के समर्थन में वे बाल विवाह, स्त्री शिक्षा का अभाव, सती–देवदासी प्रथा आदि का उदाहरण देते हैं।

ये सच है कि ये कुरीतियाँ भारतीय समाज में रही हैं, परन्तु ये कुरीतियाँ सनातन हिन्दू समाज की पहचान नहीं हैं। हजारों वर्षों के लम्बे कालखण्ड में इन कुरीतियों का कालखंड बहुत कम रहा है और आज इनमें से अधिकांश का अस्तित्व भी नहीं रहा है। जैसे–जैसे स्त्री शिक्षा में बढ़ोतरी हो रही है, भारत की महिलाएँ फिर से अपना प्राचीन गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर रही हैं। विश्व के प्रथम ग्रंथ ऋग्वेद में 24 तथा यजुर्वेद में 5 विदुशी महिलाओं का उल्लेख मिलता है जो वेद मंत्रों की द्रष्टा (साक्षी, रचनाकार) थीं। इन विद्धान ऋषिकाओं में अपाला, घोषा, सरस्वती, सर्पराज्ञी, सावित्री, सूर्या, अदिति, लोपामुद्रा, विश्ववारा, आत्रेयी, रोमशा आदि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता हैं

बृहदारण्यक उपनिषद के अनुसार राजा जनक के दरबार में ऋषि याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ करने वालों में विदुशी गार्गी का उल्लेख मिलता है। याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी स्वयं एक विदुशी महिला थीं। आद्य शंकराचार्य

"ये सच है कि ये कुरीतियाँ भारतीय समाज में रही हैं, परन्तु ये कुरीतियाँ सनातन हिन्दू समाज की पहचान नहीं हैं। हजारों वर्षों के लम्बे कालखण्ड में इन कुरीतियों का कालखंड बहुत कम रहा है और आज इनमें से अधिकांश का अस्तित्व भी नहीं रहा है। जैसे–जैसे स्त्री शिक्षा में बढ़ोतरी हो रही है, भारत की महिलाएँ फिर से अपना प्राचीन गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर रही है।

और काशी के विद्वान मंडन मिश्र के बीच हुए शास्त्रार्थ में निर्णायक की भूमिका एक स्त्री (उभय भारती) ने ही निभाई थी। यजुर्वेद के मंत्र (20,9) में स्त्री–पुरुष दोनों के शासक चुने जाने के समान अधिकार की बात कही गई है। यजुर्वेद (17,45) में स्त्रियों की सेना और युद्ध में उनके भाग लेने संबंधी उल्लेख मिलते हैं। अथर्ववेद के एक अन्य मंत्र (11,1,17) में स्त्रियों को शुद्ध, पवित्र, यज्ञीय (यज्ञ के समान पूजनीय) माना गया है। अथर्ववेद के मंत्रों (7,38,4 एवं 12,3,52) में निर्देश दिया गया है कि स्त्रियाँ सभा और समिति में जाकर भाग लें और अपने विचार प्रकट करें। महानिर्वाण तंत्र के अनुसार 'एक लड़की को पूरे परिश्रम और देखभाल के साथ पढ़ाना और उसका पालन–पोषण करना चाहिए', अथर्ववेद (11,5,18) में कहा गया है कि कन्याएँ ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विदूषी होकर युवती अवस्था में विवाह करें। अकेले ऋग्वेद ने इस तरह के नारी–विषयक 422 मंत्र बताए जाते हैं। ऋग्वेद के दशम मण्डल के 102वें सूक्त में राजा मुद्गल के साथ ही रानी इन्द्रसेना (मुद्गलानी) की युद्ध में भाग लेने की कथा मिलती है, जो युद्ध में उन्हें विजय दिलाती है। वृत्रासुर की माता 'दनु' ने युद्ध में भाग लिया था और इन्द्र से लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की थी। महाराजा दशरथ की रानी कैकेई उनके

साथ युद्ध में जाती थी। कैकेई द्वारा राजा दशरथ की जान बचाने का विवरण ग्रंथों में मिलता हैं। सनातन हिन्दू भारतीय समाज में धन, विद्या और शारीरिक शक्ति के लिए तीन देवियों – लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की पूजा करने का विधान है।

यशस्वी महिला शासक परम्परा

भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में यशस्वी महिला शासक हुई है। कर्नाटक के कित्तूर की रानी चेन्नमा, तमिलनाडु के रामनाथपुरम की रानी वेलू नेचियार और उसकी सेनापति कुयिली, काकतीय वंश की रानी रूद्रमा देवी, पुर्तगालियों के साथ युद्ध करने वाली तुलुनाडु (तटीय कर्नाटक) की रानी अब्बक्का, मध्यभारत की गोंडा रानी दुर्गावती, इंदौर–मालवा की अहिल्याबाई होल्कर, गुप्त साम्राज्य में वाकाटक की रानी प्रभावती गुप्त, मराठा महारानी ताराबाई, कश्मीर की रानी रिद्धा, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई जैसी अनेक महिला शासक हुई हैं।

योद्धा के रूप में महाराजा रणजीत सिंह की पत्नी महारानी जिंद कौर (लाहौर की शेरनी), मेघालय की रानी गाइदिन्ल्यु, धार (म.प्र.) की रानी द्रौपदीबाई, महाराष्ट्र व बंगाल की क्रांतिकारी गतिविधियों को प्रोत्साहन देने वाली महारानी तपस्विनी, तुलसीपुर की रानी ईश्वर कुमारी, मध्यप्रदेश के रामगढ़ की रानी अवंतीबाई लोधी, वीरागंना उदा देवी, अनूप शहर की चौहान रानी, नाना साहेब पेशवा की पुत्री मैना, झांसी की सेना में झलकारी तथा मुन्दर देवी, नेताजी सुभाष की लक्ष्मीबाई रेजीमेंट में वीरागंनाओं सहित एक लम्बी सूची भारती की महान महिला योद्धाओं की है। क्रांतिकारी प्रभावती, असम की कनकलता बरूआ सहित गाँधी जी के स्वाधीनता संघर्ष में भी अनेक महिला नेत्रियों की भागीदारी रही।

प्राचीन और अर्वाचीन (वर्तमान भारत) की इस यशस्वी मातृशक्ति की सार्वजनिक चर्चा करने सहित इतिहास की पुस्तकों में पाठ्यपुस्तकों में उल्लेखनीय विवरण समाहित करने की आवश्यकता है। ऐसा होने पर भारत को कमतर दिखाने वाले विदेशी इतिहासकारों व वर्तमान के वाम स्यूडो सेक्युलर लॉबी को महिला विरोधी एवं भारत विरोधी नैरेटिव स्वतः ही ध्वस्त होता दिखाई देगा।

(पाथेय कण से साभार)

'क्यों बार-बार हिन्दू आस्था पर होते हैं हमले : विनायक राव'

रतलाम, 28 मई 2024। विश्व हिंदू परिषद का प्रतिवर्ष होने वाला परिशद शिक्षा वर्ग इस बार रतलाम के हिमालय इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित किया गया है। इस वर्ग में पूरे प्रांत (इंदौर और उज्जैन सम्भाग) के 28 जिलों के चयनित शिक्षार्थी प्रशिक्षण ले रहे हैं, जिनकी सँख्या 100 से अधिक है। यह वर्ग 25 मई से 4 जून तक चलने वाला है। प्रशिक्षण वर्ग में प्रतिदिन केंद्रीय पदाधिकारियों का मार्गदर्शन सभी शिक्षार्थियों को प्राप्त हो रहा है। प्रशिक्षण वर्ग में विशेष रूप से केंद्रीय सह संगठन महामंत्री विनायक राव देशपांडे और केंद्रीय प्रचार प्रसार प्रमुख और प्रवक्ता विजय शंकर तिवारी उपस्थित रहे।

विनायक राव ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि क्यों बार–बार हमारे मंदिरों को तोड़ा जाता है, हमारी माता–बहनों पर अत्याचार किये जाते हैं, हमारे मानबिन्दुओं पर हमले होते हैं, इसको समझने की आवश्यकता है। हमारे राजाओं ने मुस्लिम आक्रांताओं को बार–बार छोड़ा पर उन्हीं ने फिर हम पर आक्रमण किये। भारत ने युद्ध में 90 हजार पाकिस्तानी सैनिकों को बंधक बना कर

वापस छोड़ दिया था, पाकिस्तान हमेशा समझौता करता है, फिर आतंकवाद को पोषित करता है। हमारे नेता कहते हैं कि सारे धर्म समान हैं, ऐसा बोलने वाले नेताओं ने न कुरान पढ़ी है, न बाइबल पढ़ी है। कुरान में 24 ऐसी आयतें हैं, जो कुरान को न मानने वालों के विरोध में हैं। कुरान में लिखा है, काफिरों को जीने का अधिकार नहीं है, उनकी सम्पत्ति, महिलाओं को लूटो। इस्लाम और ईसाइयत में उनके एक–एक धर्म ग्रंथ हैं, वो एक ही ईश्वर को पूजने की बात करते हैं। पर हमारे यहाँ सभी को अपनी श्रद्धा अनुसार उपासना करने की आजादी है, हम कहते हैं कि ईश्वर एक है, पर उनके रूप अनेक हैं, सब में ईश्वर हैं, वो सर्वव्यापी हैं।

वहीं उनके मजहब में उनके ईश्वर सन्देश वाहक भेजते हैं, पर हमारे धर्म में भगवान स्वयं अवतार लेकर धरती पर आते हैं। वो कहते हैं हमारा ईश्वर ही एकमात्र ईश्वर है। हम कहते हैं कि हमारे भगवान भी भगवान हैं। मुस्लिम धर्म के अनुसार अल्लाह को न मानने वाले काफिर हैं, उन्हें दोखज (नर्क) मिलेगी। ईसाइयों के अनुसार जो ईसा मसीहा को मानता है, उसे ही जन्नत मिलेगी। हमारे धर्म में सभी को मोक्ष और ईश्वर की प्राप्ति के मार्ग बताए गए हैं। हमारे यहाँ नारी को देवी रूप में सम्मान दिया जाता है, हम धन की देवी को लक्ष्मी, शक्ति की देवी को दुर्गा, विद्या की देवी को सरस्वती के रूप में पूजते हैं, नारी का यह सम्मान सिर्फ हिन्दू धर्म में ही है। अन्य मतपंथ के अनुसार तो महिलाओं को कोई विशेष अधिकार नही हैं। दारुल हरब (जहाँ इस्लाम नहीं है) को दारुल इस्लाम (पूर्ण इस्लाम की स्थापना) में परिवर्तित करने की बात इस्लाम में कही गई है। डॉ. अम्बेडकर जी ने कहा था कि शरीयत को मनाने वाला मुस्लिम कभी भारत के संविधान को स्वीकार नहीं कर पायेगा।

हमारी अस्मिता हिन्दू है

डॉ. प्रवेश कुमार

हिन्दू पहचान ने हमें सामूहिक शक्ति दी, जिसने हमें विदेशी शक्तिओं से लड़ने की अभिप्रेरणा भी दी। इसीलिए हमें हमारी हिन्दू अस्मिता पर गौरव होना चाहिए, झूठे सेक्युलर षडयंत्र से बचना चाहिए। हिन्दू हमारी राष्ट्रीयता है, हिन्दुत्व हमारा जीवन दर्शन है, जिस प्रकार मान लिया जाए कि भारत अगर शरीर है, तो हिन्दू और हिन्दुत्व उसकी आत्मा है।

हिन्दू भारत की पहचान है लेकिन पराधीनता के कालखण्ड ने भारत के हिन्दू जनमानस के भीतर अपनी अस्मिता, अपने गौरव, अपने इतिहास के प्रति हीनभाव का संचार कुछ इस तरह कर दिया, जैसे सूर्य के तेज को कुछ समय के लिए, ग्रहण ढंकने का प्रयास करता हो। हमने जब हिन्दू की बात की तो अपनी अस्मिता की बात की, यह हमारी अस्मिता सभी को साथ ले कर चलने की ही रही, तभी तो हमने ही कहा कि यह सम्पूर्ण विश्व हमारा परिवार है। तभी तो हमारा ऋषि कहता है–

''अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्?

हम ही कहते हैं कि यह दुनियाँ एक परिवार है, हमारे सुख–दुख सब साँझे हैं। विश्व में परस्पर 'सह–अस्तित्व' के विचार के असल प्रचारक हमारी हिन्दू सँस्कृति ही है।

हम हिन्दू ही हैं, जिसने सब में अपने को देखा और उसमें अपना साक्षात्कार किया, यह हम ही हैं और हमारी ही हिन्दू सँस्कृति है, जिसने कभी भी भिन्न पूजा पद्धति के आधार पर दुनियाँ में कहीं पर भी कोई नरसंहार नहीं किया। बल्कि हमने तो यह भी कह दिया कि आपकी पूजा विधि कुछ भी हो, फिर भी आप हिन्दू ही हैं। क्या हम नहीं जानते कि वैदिक ऋषि ''एकम सत् विप्रा बहुदा वदन्ति'' का विचार देता है। जिसके अर्थ की व्याख्या की जाये, तो ज्ञात होता है कि 'सत्य तो एक ही है, (Truth is only one)' उसे बताने वाले विद्वानों ने भिन्न–भिन्न तरीकों से बताया है। यह कहना कोई आसान विषय नहीं है कि सत्य तो एक ही है, बताने वालों ने अलग–अलग तरीके से इसे समझाया है, यही बात दुनियाँ के अब्रातिक रिलीजन के अनुयायियों के आगे क्या बोला जा सकता है? तो उतर आता है नहीं। क्योंकि दुनियाँ भर के अब्रातिक रिलीजन की परिभाषा में ''एक किताब, एक भगवान और एक तरीके से की जाने वाली पूजा पद्धति वर्णित है'' उसके बाहर जाने मात्र से आप उस कम्यून से बाहर हो जाते हैं। वैसे रिलीजन की परिभाषा भी कुछ इसी तरह की है, इसीलिये स्वामी विवेकानन्द जी ने दुनियाँ के एकमात्र हिन्दू आस्था, जीवन तत्व में विश्वास रखने वालों को ही एक धर्म के दायरे में माना है, बल्कि विश्व में सभी रिलीजन की श्रेणी में आते हैं।

रिलीजन में ''एक किताब, एक भगवान और एक प्रकार की पूजा पद्धति'' का होना अनिवार्य है। लेकिन अपना हिन्दू समाज तो ऐसा नहीं है – (1) क्या हिन्दू समाज किसी एक ही प्रकार के पूजा पद्धति को सर्वमान्य हिस्सा मान सकता है ?। (2) क्या हिन्दू समाज किसी एक ही ग्रंथ को अपने धर्म का ग्रंथ मान सकता है ? (3) क्या एक ही स्वरूप के भगवान में ही सम्पूर्ण हिन्दू समाज आस्था रख सकता है ?। तो ऐसा कम से कम हिन्दू समाज के भीतर करना

नामुमकिन है। लेकिन हम फिर भी तमाम भिन्नता–विभिन्नता को साथ लेते हुए बिना किसी संघर्ष के साथ–साथ रहते आ रहे हैं। इसी हिन्दू को समझाते हुए श्री महर्षि अरविन्द कहते हैं, ''जिसे हम हिंदू धर्म कहते हैं, वह वास्तव में सनातन धर्म है, क्योंकि वह सार्वभौम धर्म है, जो अन्य सभी को अपने में समाहित कर लेता है, यदि कोई धर्म सार्वभौम नहीं है, तो वह सनातन नहीं हो सकता''।

भारत के सनातन हिन्दू विचार ने ही हमें लगभग 1000 वर्षों तक हमारे भीतर हमारे ''स्व'' को जागृत रखा, जिसके बल पर हम प्रशासनिक परतंत्रता के बावजूद उनसे संघर्ष करते रहे। भारत की पहचान हिन्दू है, इस पहचान के लिए भारत का समाज लड़ता रहा है। श्री अरविंद ने हिन्दू सनातन धर्म को राष्ट्र और राष्ट्रवाद माना है। वे कहते हैं 'सनातन धर्म ही राष्ट्रवाद है, यही मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ'। हिंदू हमारी राष्ट्रीय पहचान है, इसी बात को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार भी मानते थे। इसी का परिणाम था कि हिन्दू समाज के संगठन हेतु बने संगठन का नाम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ रखा गया।

इसका नाम हिन्दू स्वयंसेवक संघ भी रखा जा सकता था, लेकिन डॉ. साहब का मानना था कि हिन्दू ही तो हमारी राष्ट्रीयता है। इसी हिन्दू राष्ट्रीय पहचान ने हमारे भीतर के तमाम उपस्थित भेदों के बावजूद भी हमें आपस में जोड़े रखा। इसी हिन्दू विचार ने हम सभी को हजारों वर्षों की गुलामी के कालखंड में भी हमारे भीतर आत्म स्वाभिमान एवं हमारे स्व को नहीं समाप्त होने दिया। जिस बल को आधार मान वर्षों हम लड़ते रहे, हम सभी में एक शक्ति का संचार जिस विचार ने किया। इसी विचार का नाम ही तो ''हिन्दुत्व'' है, इसी विचार के कारण वर्षों की अधीनता काल में भी हमें हमारे मूल्यों से जोड़े रखा।

आज के तमाम बौद्धिक जमात को इस एक शब्द से तकलीफ होती है, वहीं यह शब्द तो भारत के पूरे विचार दर्शन को ही वर्षों से व्यक्त करता आ रहा है। भारत के हिन्दू दर्शन का ही यह प्रभाव है, जिसके कारण से हमने सभी मतों संप्रदायों को अपने साथ–साथ चलने की

स्वीकृति दी, हमने एकता को जबरन नहीं स्वीकार किया, बल्कि उस एकता को हमने सहज माना। हमने विभिन्नता में एकता का दर्शन किया, भाषा, बोली भिन्न है, खान–पान भी एक नहीं, भौगोलिक स्थिति में भी भिन्नता है, लेकिन फिर भी हम एक हैं। यह हमारा हिदुत्व का चिंतन ही है, जो भूमि को भी अपनी माता मानता है। हम अपनी भारत भूमि को माता कहते हैं। यह मातृभूमि जो हमें सब कुछ देती है उसके प्रति कृतज्ञता का भाव आना ही उसको माँ के आसन पर बैठा देता है। यही विचार हमें विश्व के दर्शन और चिंतन से भिन्न करता है। वहीं हम देखें तो हमारे लिए राष्ट्र की संकल्पना कोई भौगोलिक सीमा, पूजा पद्धति, नस्ल, रंग आदि नहीं है, बल्कि हमारा राष्ट्र तो हमारे भीतर जीता जागता जीवन है। इसलिए दुनियाँ में नेशन का जन्म भौतिक अवधारणा है, तो वहीं हम इसे साँस्कृतिक, एवं आध्यात्मिक मानते हैं। हमारा राष्ट्र किसी साम्राज्यवादी धारणा पर आधारित नहीं है, बल्कि हम तो मानते हैं कि राष्ट्र का जन्म ही ''ऋषियों की भद्र इच्छा के परिणाम स्वरूप ही होता है''।

स्वामी राम तीर्थ कहते हैं कि ''यह भारत मेरा शरीर है, मेरा एक–एक अंग भारत का हिस्सा है, जब मैं श्वास लेता हूँ तो भारत श्वास लेता है। जब मैं चलता हूँ तो भारत भी चलता है। इसलिए जो लोग या एक बौद्धिक वर्ग भारत को हिन्दुत्व के खिलाफ करने की कोशिश में लगा है। यह बौद्धिक जमात जो कहने लगता है कि हिन्दू शब्द तो अभी नया है। वह यह भी जान ले कि हम सनातन हिन्दू धर्मवलम्बी हैं। यह सच है कि हिन्दू शब्द का प्रचलन बहुत बाद में हुआ है। लेकिन क्या भारत को हिन्दू पहचान इस्लामिक आक्रांताओं के आने से पूर्व बताने की आवश्यकता पड़ी थी? क्योंकि भारत में तो सभी एक ही प्रकार की जीवन पद्धति का अनुसरण करने वाले ही थे, जब सब एक ही जैसे थे तो एक सामूहिक पहचान की आवश्यकता क्या थी?

भारत में शैव, शक्ति के उपासक, विष्णु, अकार–निराकार, नाथ कितने ही थे, लेकिन सब सनातन हिन्दू के हिस्से थे। परन्तु मुस्लिम शासकों के सामने निडर भाव से खड़े होने के लिए तमाम भेदों को भूल एक तत्व, मूल्य के आधार पर हिन्दू पहचान का निर्माण किया गया। इसी हिन्दू पहचान ने हमें सामूहिक शक्ति दी, जिसने हमें विदेशी शक्तियों से लड़ने की अभिपप्रेरणा भी दी। इसीलिए हमें हमारी हिन्दू अस्मिता पर गौरव होना चाहिए, झूठे सेक्युलर षडयंत्र से बचना चाहिए। हिन्दू हमारी राष्ट्रीयता है, हिन्दुत्व हमारा जीवन दर्शन है, जिस प्रकार मान लिया जाए कि भारत अगर शरीर है, तो हिन्दू और हिन्दुत्व उसकी आत्मा है।

दादागिरी की पराकाष्ठा है सीएम हाउस में अपनी ही महिला सांसद पर लात-घूसे चलाना

- डॉ उमेश प्रताप वत्स

समाज में परिवर्तन का वायदा लेकर एक दशक पहले गठित राजनीतिक पार्टी आज जनता के पैमाने पर धीरे–धीरे असफल साबित होती जा रही है। ईमानदार पार्टी का तमगा लगाकर भ्रष्टाचार व भ्रष्टाचारियों को जड़ से उखाड़कर फेंकने की बात करने वाला दल आज आकंठ भ्रष्टाचार में डूबा हुआ है, जिसके एक–दो नहीं चार–चार मंत्री मुखिया सहित जेल की सलाखों के पीछे रह चुके हैं या रह रहे हैं। भ्रष्टाचार से भी दो कदम आगे महिला अत्याचार के आरोप में भी पार्टी चहुंओर से घिरती जा रही है। अपनी ही युवा सांसद जो कि दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष तथा पार्टी मुखिया के विश्वासपात्र टीम में रह चुकी हैं, आज चीख–चीखकर सुरक्षा की माँग कर रही है। इस युवा महिला सांसद स्वाति मालीवाल का आरोप है कि मुझे मुख्यमंत्री के घर में मुख्यमंत्री के पीए विभव कुमार ने लात–घूंसों का प्रयोग करते हुए बुरी तरह पीटा है। जिस हालात में स्वाति मालीवाल की पिटाई हुई है, यह जानकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। पेट में, कमर में लात–घूंसे मारना, जहाँ एक ओर बिभव कुमार की दादागीरी दर्शाता है, वहीं उसे मिली खुली छूट की ओर भी संकेत करता है। जिस दल में अपनी झूठी प्रतिष्ठा के लिए अपनी ही महिला सांसद पर लात–घूंसे चलाये जा सकते हैं, वहाँ आम कार्यकर्ता की क्या कद्र होगी, इसका अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है।

स्वार्थ व भ्रष्टाचार की राजनीति के विरोध का दम भरने वाले आज अपने निजी स्वार्थ के लिए तथा भ्रष्टाचारियों को बचाने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। दिल्ली के लोगों में सुगबुगाहट है कि पार्टी के मुखिया केजरीवाल ने स्वाती मालीवाल को राज्यसभा सदस्य से त्यागपत्र न देने पर यह दमनकारी कदम उठाया। 'इकोनोमिक टाइम्स' की रिपोर्ट के अनुसार, सीएम केजरीवाल ने अब स्वाति मालीवाल से राज्यसभा की सदस्यता त्यागने का आग्रह किया है। केजरीवाल अपनी जमानत के बदले अभिषेक मनु सिंघवी को दिल्ली से राज्यसभा भेजना चाहते हैं। दरअसल कॉंग्रेस के नेता व वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ट्रायल कोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक सीएम केजरीवाल को बचाने के लिए पैरवी कर रहे हैं। अदालत में अभिषेक सिंघवी की दलीलों के चलते ही स्पेशल बेंच ने सीएम अरविंद केजरीवाल को बड़ी राहत देते हुए, उन्हें अंतरिम जमानत दी है, ताकि वह चुनाव प्रचार अभियान में भाग ले सकें। अब सीएम केजरीवाल इसके लिए अभिषेक मनु सिंघवी को बड़ा इनाम देना चाहते हैं। अपनी इस मंशा को पूरा करने के लिए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल को बलि का बकरा बनाना चाहा, उनसे संसद के उच्च सदन से इस्तीफा देने का आग्रह किया है, ताकि अभिषेक मनु सिंघवी को पार्टी के दिल्ली कोटे से राज्यसभा भेजा जा सके। इसी वर्ष जनवरी में दिल्ली महिला आयोग की पूर्व प्रमुख स्वाति मालीवाल ने राज्यसभा सदस्यता की शपथ ली थी। सीएम अरविंद केजरीवाल ने पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के माध्यम से स्वाति मालीवाल को यह संदेशा भिजवाया था। जिसकी बात करने के लिए ही मालीवाल, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से मिलने के लिए उनके सिविल लाइंस स्थित आवास पर गई थीं। आरोप है कि वहाँ केजरीवाल के निजी सहयोगी बिभव कुमार ने उनके साथ बदसलूकी की तथा बुरी तरह से मार–पीट की जो कि पार्टी के भीतर चल रही तानाशाही, अहंकार और व्यक्तिवाद को उजागर करती है।

झूठ बोलकर व झूठे वायदे करके आप कुछ समय के लिए लोगों का बेवकूफ बना सकते हो, किंतु लंबे समय तक नहीं। कहते भी हैं कि कोई भी व्यक्ति अथवा कोई भी सँस्था की बुनियाद झूठ पर बहुत समय तक टिकी नहीं रह सकती, अपितु रेत के किले की तरह जमीदोंज हो जाती है।

जनता जनार्दन राजनीतिक दलों के झूठे वायदों से परेशान होकर नये सपने दिखाने वाले को अपने सिर पर बैठा लेती है, किंतु जब सपने दिखाने वाला चतुराई दिखाने लगे, तो उसे जमीं दिखाने में भी देर नहीं लगाती। अहंकार के घोड़े पर सवार होकर कई बार व्यक्ति ऐसी गलती कर बैठता है कि सवार को गिरते देर नहीं लगती। सेफ गेम खेलने वाला आप मुखिया भी कई बार ऐसी गलतियाँ दोहरा चुका है, अब उसका गिरना तय है।

आपको याद होगा जब दिल्ली में भ्रष्टाचार चरम सीमा पर था, फ्लाईओवर निर्माण के कुछ समय बाद ही भुरभुरा कर गिर रहे थे, टू जी, थ्री जी, कोयले घोटाले आदि के चर्चे जब गली–गली में चर्चा बने हुये थे, तत्कालीन मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के साथ सुरेश कलमाड़ी जैसे नेताओं के भ्रष्टाचार की लिस्ट समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रही थी, तब नये राजनीतिक दल के उदय को जनता ने हाथों–हाथ लिया और दिल्ली की गद्दी पर विराजमान कर दिया। किंतु बीते लगातार दो सालों से दिल्ली की राजनीति में चर्चाओं में रहे शराब घोटाले की जद में आम आदमी पार्टी के कई शीर्ष नेता आते रहे और अब इसकी चपेट में इनके मुखिया भी आ ही गए। जो कि भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने की मुहिम के साथ राजनीति में आए थे, वह आज खुद भ्रष्टाचार के आरोप में बुरी तरह घिर गए हैं। इनके लिए मुंबईया फिल्म की ये पंक्तियाँ सटीक बैठती है – 'क्या से क्या हो गए, देखते–देखते'।

भारत में विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का चुनाव चल रहा है। यह चुनाव अभी तक के सभी चुनावों से अलग तरह का है, क्योंकि इस बार एक ओर भारत है, तो दूसरी ओर विश्व के कई शक्तिशाली देश विपक्षी पार्टियों को ढाल बनाकर खड़ें है। इस शीतयुद्ध रूपी राजनीतिक मुकाबले में विश्व के बहुत से देश भारत की बढ़ती प्रगति व तीव्र विकास गति से तथा तीसरी आर्थिक शक्ति की घोषणा के बाद अत्यंत घबराये हुए हैं। वे कभी नहीं चाहेंगे कि तीसरी पारी में भी कोई ऐसा व्यक्ति प्रधानमंत्री बने, जो भारत की जनता को सबका साथ सबका विकास के नारे से एक सूत्र में पिरो कर विकास का परचम फहराए और भारत को महाशक्ति के रूप में स्थापित करने में सफल रहे। विकास के इन बढ़ते कदमों को रोकने के लिए वे किसी भी हद तक जा सकते हैं और राष्ट्रवादी विचारधारा को रोकने के लिए पानी की तरह पैसा बहाने को तैयार हैं। इसी पैसे को प्राप्त करने के लिए भारत की सभी राजनीतिक पार्टियों में वर्तमान सरकार को सत्ता के सिंहासन से उखाड़ फेंकने की होड़ लगी हुई है। इसी होड़ के कारण एक–दूसरे से भिन्न विचारधारा वाले, फूटी आँख भी न सुहाने वाले, सब एक मंच पर आ गए। जनता में इन दलों ने जो जातिगत, धर्म व अलगाव के बीज बो रखे हैं, उनसे पनप रही पौध इनके वोटर के रूप में सक्रिय है और साझा उम्मीदवार खड़ा करने के कारण ये वर्तमान सरकार को जबरदस्त टक्कर भी दे रहे हैं। इस बार का चुनाव 2019 जैसा आसान नहीं है। अब यह जनता को तय करना है कि संविधान द्वारा दिये गये मताधिकार का प्रयोग वे किस विचारधारा को पोषित करने के लिए करते हैं। भ्रष्टाचार, अत्याचार, हिंसा, अहंकार के पक्ष में अथवा राष्ट्र निर्माण व राष्ट्र गौरव के पक्ष में। मतदान जिसके भी पक्ष में हो, किंतु मतदान अवश्य हो।

umeshpvats@gmail.com

अहिल्या देवी होलकर जी की ३००वीं जन्म जयंती पर कार्यक्रम

सूरत। विश्व हिंदू परिषद दक्षिण गुजरात प्रांत के सूरत विभाग द्वारा दिनांक 31 मई 2024 को पुण्य श्लोका, कर्मयोगी, राष्ट्रीय योगिनी, भारत की साँस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपरा का रक्षण तथा संवर्धन करने वाली रानी अहिल्या देवी होलकर जी की 300वीं जन्म जयंती निमित्त अहिल्या देवी वंदना कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम में विहिप केंद्रीय सह संगठन महामंत्री श्री विनायक राव देशपांडे ने पुण्य श्लोका अहिल्या देवी होलकर जी के जीवन चरित्र का गहन विश्लेषण करते हुए बताया कि 300 वर्ष पूर्व भारत के इतिहास में एक स्त्री ने अपने पति और ससुर के देहावसान के पश्चात शासन की धुरी संभाली और अपने राज्याश्रित प्रजा जनों की सर्वांगीण सेवा की। अपने राज्य क्षेत्र के शिवाय भी तमाम उन धार्मिक मंदिरों, जिनको मुगलों द्वारा तोड़ा गया था, उन सभी मंदिरों का पुनः निर्माण का काम रानी अहिल्या देवी होल्कर ने करवाया। सादगी पूर्ण जीवन जीते हुए उन्होंने अपनी संपत्ति को भव्य मंदिर निर्माण कार्य, कुआँ, तालाब, धर्मशाला तथा पवित्र नदियों के किनारे घाट बनवाने में लगाया तथा सनातन धर्म की रक्षा के लिए सदैव अपना सर्वस्व समर्पण करती रहीं। इस कार्यक्रम में दक्षिण गुजरात प्रांत के कार्यकर्ता व आम जनमानस की सहभागिता रही।

पीओके हाथ से निकल जाने के डर से सहमा पाकिस्तान

– ललित गर्ग

पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में पाकिस्तान सरकार की तानाशाही, उदासीनता, उपेक्षा एवं दोगली नीतियों के कारण हालात बेकाबू, अराजक एवं हिंसक हो गए हैं। जीवन निर्वाह की जरूरतों को पूरा न कर पाने से जनता में भारी आक्रोश एवं सरकार के खिलाफ नाराजगी चरम सीमा पर पहुँच गयी है। गेहूँ के आटे और बिजली की ऊँची कीमतों के खिलाफ जबरदस्त आंदोलन चल रहा है। प्रदर्शनकारियों एवं सुरक्षा बलों के बीच हिंसक झड़पों में एक पुलिस अधिकारी की मौत हो गयी, जबकि 100 से अधिक लोग घायल हो गए। घायलों में अधिकतर पुलिसकर्मी हैं। पीओके के लोग पाकिस्तान सरकार की नाकामी के खिलाफ सड़कों पर हैं। पाकिस्तान को पीओके के हाथ से निकल जाने का डर सताने लगा था। पीओके की आवाज दबाने के लिए पाकिस्तान की शहबाज शरीफ सरकार ने चप्पे–चप्पे पर पुलिस बल को तैनात किया है एवं आन्दोलनकारियों को दबाने की दमनकारी कोशिशें की जा रही है। पीओके के बगावती तेवर देख पाकिस्तान के हाथ–पांव फूल गये हैं।

दरअसल अक्टूबर 1947 में पाकिस्तान के कब्जे के बाद से ही पीओके लगातार सरकार की उपेक्षा, उत्पीड़न एवं उदासीनता झेल रहा है। उसकी समस्याओं और विकास पर ध्यान देने की बजाय पाकिस्तान का जोर वहाँ आतंकियों के ट्रेनिंग कैंप खोलने पर ज्यादा रहा। पाकिस्तान की सरकार ने पीओके का इस्तेमाल भारत में अशांति, आतंक एवं हिंसा फैलाने के लिए किया है, वह पीओके के माध्यम से कश्मीर को हड़पने की हरसंभव कोशिश करता रहा है, लेकिन वहाँ के निवासियों की जरूरतों पर कभी ध्यान नहीं दिया। यूं तो अभी समूचे पाकिस्तान के हालात बद से बदतर हैं, गरीबी, महंगाई एवं आर्थिक दिवालियापन से घिरा है, दुनियाँ भर से आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए झोली लिए घूम रहा पाकिस्तान भारत में अशांति एवं आतंक फैलाने से बाज नहीं आ रहा है। दरअसल पाकिस्तानी कमरतोड़ महंगाई एवं जनसुविधाओं के अभाव से जूझ रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने 3 अरब डॉलर के कर्ज की मंजूरी देते समय कड़ी शर्तों लगाई थीं, जिसके कारण स्थिति और खराब हो गई है। बिजली दरों में बढ़ोतरी से दिक्कतें बढ़ गई हैं और पाकिस्तान में लोग सड़कों पर उतरने को मजबूर हो गए हैं। इन्हीं जर्जर एवं जटिल हालातों के बीच पीओके के हालात पाकिस्तान के लिए नया सिरदर्द बन गया है। पाकिस्तान के सुरक्षा बल प्रदर्शनकारियों के मुज्जफराबाद मार्च को दबाने की जितनी कोशिश कर रहे हैं, विरोध प्रदर्शन उतना ही उग्र हो रहा है। पीओके की अवामी एक्शन कमेटी के मार्च और धरने के आह्वान के बाद बेकाबू होते हालात 1955 के अवज्ञा आंदोलन की यादें ताजा कर रहे हैं, जब पीओके के लोगों और पाकिस्तानी फौज में सीधा टकराव हुआ था। अब फिर पीओके के लोगों के उबलते गुस्से से पाकिस्तानी हुकूमत के माथे पर बल पड़ गए हैं, समस्या को अनियंत्रित एवं अनिश्चित हालात में पहुँचा दिया है।

पीओके के सबसे उत्तरी इलाके गिलगिट–बाल्टिस्तान के लोग पिछले कुछ दिनों से पाकिस्तान के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। प्रदर्शनकारी भारत के केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख के साथ मिलाए जाने की मांग कर रहे हैं। पीओके में आजादी के नारे लगने एवं

उसे लद्दाख के साथ मिलाए जाने की माँग के बाद शहबाज शरीफ सरकार और पाकिस्तानी सेना दोनों सकते में हैं। पाकिस्तान के अत्याचार के खिलाफ पीओके की जनता जिस तरह खड़ी हो गई, उसने पाकिस्तानी नीति निर्माताओं को तनाव में ला दिया है। हजारों की सँख्या में कश्मीरी लोग पीओके में जगह–जगह सड़कों पर उतर आए, तो पाकिस्तान को पीओके के हाथ से निकल जाने का डर सताने लगा है। पीओके में विरोध को दबाने के लिए पाकिस्तानी दमन चक्र शुरू हो गया है। इसमें पाकिस्तान रेंजर्स और फ्रंटियर कोर को भी लगाया गया है। पीओके के सभी 10 जिलों में इंटरनेट और मोबाइल सेवाएँ बंद कर दी गई हैं। भाजपा की मोदी सरकार के मुख्य एजेंडे में पीओके को पाकिस्तान से मुक्त कराकर भारत में शामिल करना पहले से निश्चित है। पीओके का ताजा संघर्ष एवं आन्दोलन भाजपा की राह को निश्चित ही आसान करेंगी।

भारत के विभाजन के तुरंत बाद पाकिस्तान द्वारा जम्मू और कश्मीर की रियासत पर आक्रमण करने के बाद पीओके बनाया गया था। पाकिस्तानी सेना और आदिवासी हमलावरों के हमले के कारण, महाराजा हरिसिंह ने भारत से सैन्य मदद मांगी, जिसके बाद भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना को पूरी रियासत पर कब्जा करने से रोक दिया। अब लगभग सात–आठ दशक से अधिक समय के बाद, जबकि पाकिस्तान भारी वित्तीय, राजनीतिक और मानवीय संकट में फंस गया है, जबकि भारत अपने आर्थिक, राजनीतिक और वैज्ञानिक मापदंडों में तेजी से आगे बढ़ रहा है और अपनी सैन्य शक्ति को सशक्त कर रहा है। जम्मू–कश्मीर में विकास की गंगा बह रही है, वहाँ के लोग शांति, शिक्षा, व्यापार एवं विकास की दृष्टि से नये कीर्तिमान गढ़ रहे हैं, जबकि पीओके कम मानव विकास के साथ आर्थिक प्रगति से वंचित जनजीवन से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहा है। स्वयं को ठगा महसूस करते हुए पीओके की आम जनता अब शांति, अमन, विकास चाहती है, जो कि पाकिस्तान में रहते हुए असंभव है।

दोगली नीतियों के चलते पीओके

के प्राकृतिक संसाधनों का पाकिस्तान खुलकर दोहन करता रहा, जबकि वहाँ के लोग ईंधन, बिजली, शिक्षा, चिकित्सा और जरूरी बुनियादी सुविधाओं की कमी से जूझते रहे। पीओके के लोगों ने मई 2023 में बिजली की ऊँची दरों के खिलाफ आंदोलन शुरू किया था, जो एक साल बाद अब उग्र रूप ले चुका है। आंदोलन से काफी पहले पीओके के लोगों का भारत के प्रति झुकाव समय–समय पर मुखर होता रहा है। पाकिस्तान की राजनीति की दूषित हवाओं ने पीओके की चेतना एवं सोच को आन्दोलनकारी बना दिया है। सत्ता के गलियारों में स्वार्थों की धमाचौकड़ी देखकर वहाँ के लोग समझ गए कि उनका शोषण एवं उत्पीड़न ही हो रहा है। यही कारण है कि पिछले साल पीओके और गिलगिट के लोगों ने पाकिस्तान की भेदभाव वाली नीतियों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के दौरान अपने इलाकों को भारत के साथ मिलाने को ही अपने हित एवं शांतिपूर्ण जीवन के अनुरूप मानने लगे हैं। इसके लिए किए गए तब के प्रदर्शन के सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो में वहाँ के लोग 'आर–पार जोड़ दो, करगिल को खोल दो' जैसे नारे लगाते नजर आए थे। वहीं देश भर में गेहूँ के आटे की कमी, बलूचिस्तान में उग्रवाद, अफगानिस्तान के साथ सीमा संघर्ष, पाकिस्तानी तालिबान द्वारा हमलों और एक गंभीर वित्तीय संकट से जूझ रहे पाकिस्तान के साथ, पीओके में लोगों ने काफी कड़वे अनुभव किए हैं। निर्वासित पीओके नेता, शौकत अली कश्मीरी भी पीओके में लोगों के सामने आने वाली कठिनाइयों को उजागर करने के लिए दिसंबर से विभिन्न देशों में बैठकें कर रहे हैं। उन्होंने हाल ही में जिनेवा में समाचार एजेंसी एएनआई से कहा कि पाकिस्तान ने 1948 से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया है, लेकिन बदले में पीओके में लोगों को बेरोजगारी और निर्वासन मिला। अधिकांश लोगों को चिकित्सा सुविधा नहीं होने के कारण बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है।

पीओके के लोग चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) का भी विरोध कर रहे हैं। उनका मानना है कि गलियारे की आड़ में उनकी जमीन का इस्तेमाल भारत विरोधी गतिविधियों के लिए किया जाएगा और भारत के जवाबी हमले उन्हें झेलने पड़ेंगे। चूँकि भारत अब पहले वाला भारत नहीं रहा, उसकी सैन्य ताकत का मुकाबला करना पाकिस्तान के लिए संभव नहीं रहा है, इसलिए बिना मतलब भारत के आक्रमण को झेलने से स्वयं को बचाने के लिए पीओके के लोग भारत में विलय को ही उचित मानते हैं। पीओके में विरोध प्रदर्शन के दौरान जिस तरह भारतीय तिरंगा लहराया जा रहा है और भारत में विलय के स्वर उठ रहे हैं, उससे भविष्य में इस विवादित क्षेत्र पर निर्णायक पटकथा लिखे जाने के आसार नजर आ रहे हैं। भारत को पीओके के घटनाक्रम पर नजर बनाए रखने की जरूरत है, ताकि इससे हमारे सुरक्षा हितों पर प्रतिकूल असर न पड़े एवं भविष्य की नीतियों का निर्धारण करने में भी सुविधा रहे।

lalit.r.garg@gmail.com

निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन

आचार्य राघवेंद्र दास

शास्त्र लोकमंगल के लिए हैं। कोई भी शास्त्र अथवा पुराण किसी एक अथवा समूह को माध्यम बना समस्त लोक को उपकारित करता है। यह ऐसे हैं, जैसे गाय और बछड़ा। गाय तो दूध बछड़े के लिए ही निःसारित करती है, किन्तु उससे अन्य जीव भी पुष्ट होते हैं। गीता, उपनिषद् आदि भी इसी प्रकार हैं, जो सहस्रों वर्ष से मनुष्य का मंगल कर रही हैं। श्री मद्भगवद् गीता में भगवान योगेश्वर श्रीकृष्ण अर्जुन को संबोधित कर त्रिगुणातीत होने को कहते हैं। निम्न श्लोक द्रष्टव्य है–

त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान।।

(श्रीमद्भगवद्गीता, 2/45)

अर्थात वेद तीनों गुणों के कार्य का ही वर्णन करनेवाले हैं। हे अर्जुन ! तू तीनों गुणों से रहित हो जा, निर्द्वन्द् हो जा, निरन्तर नित्य वस्तु परमात्मा में स्थित हो जा, योगक्षेम की चाहना भी मत रख और परमात्म परायण हो जा। उक्त श्लोक में कर्मकाण्ड आदि को कुछ काल तक फल देने वाला अर्थ निहित है और यह प्रसिद्ध ही है कि पुण्य क्षीण होने पर पुनः मृत्युलोक में आगमन और जन्म–मरण के दुसह दुःख की प्राप्ति होती है। रामानुजाचार्य महाभाग रचित गीता भाष्य में उपरोक्त श्लोक के संबंध में कहा गया है–

सत्त्व, रज और तम त्रैगुण्य हैं। उक्त गुणों की प्रचुरता से सभी मनुष्य त्रैगुण्य कहे जाते हैं। वेद उनक विषय करने वाले हैं। अतः वे वेद तमोगुण बहुल, रजोगुण बहुल और सत्त्व गुण बहुल पुरुषों के लिए उन पर वात्सल्य करके ही उनके हित का उपदेश करते हैं। यदि वेद उन लोगों को उनके अपने गुणों के तारतम्यानुसार स्वर्गादि के साधन रूप हित का उपदेश न करें, तो फिर वे रज और तम की अधिकता के कारण सात्त्विक फल मोक्ष से विमुख हो जायें और अपने लिए अपेक्षित फल के साधन को न जानने के कारण भोग–लोलुपता से विवश होकर, जो वस्तुतः सुख के साधन नहीं हैं, उन्हीं को भ्रम से सुख के साधन समझकर उन्हीं में प्रवेश करके नष्ट हो जायें। इसलिए वेद त्रैगुण्यविषयक हैं। अतः तु निस्त्रैगुण्य हो, इस समय तुझमें सत्त्वगुण अधिक है। तू उसी को बढ़ा, एक–दूसरे से मिले हुए तीनों गुणों की प्रचुरता वाला मत हो। तात्पर्य यह कि उन तीनों की प्रचुरता वाला मत हो। तात्पर्य यह कि उन तीनों की प्रचुरता को मत बढ़ा। समस्त सांसारिक स्वभावों से रहित हो और नित्यसत्त्वस्थ अर्थात् रज व तम गुणों से रहित केवल बढ़े हुए सत्त्व में नित्य स्थित रह। आत्मस्वरूप और उसकी प्राप्ति के उपाय से भिन्न समस्त अर्थों के योग और प्राप्त अर्थों के संरक्षण दोनों को छोड़कर आत्मस्वरूप की खोज में तत्पर हो। इस प्रकार करने से तेरी रज और तम की प्रचुरता नष्ट हो जायेगी और सत्त्व बढ़ जायेगा।

गुणातीत होना ही आत्मोपासना की चरमसिद्धि है। गुणातीत हुए बगैर व्यक्ति को आत्मस्वरूप की प्राप्ति नहीं हो सकती। कर्म का पुण्य–पाप भी गुणाबद्ध व्यक्ति को ही लगता है, गुणातीत को नहीं। उपनिषद् भी इस संबंध में कहते हैं–

गुणन्वयोः यः फलकर्मकर्ता कृतस्य तस्यैव स चोपभोक्ता।
स विश्वःपस्त्रिगुणस्त्रिवर्त्मा प्राणाधिपः संचरति स्वकर्मभिः।।
(श्वेताश्वेतर उपनिषद्, 5/7)

अर्थात जो गुणों से बंधा हुआ है, फल के उद्देश्य से कर्म करनेवाला जीवात्मा ही कर्मफल का उपभोग करनेवाला है, वह विभिन्न रूपों वाला, त्रिगुणमय, तीन मार्गों से गमन करने वाला जीवात्मा अपने कर्मों से प्रेरित हो नाना योनियों में विचरता है। श्रीमद्भगवद् गीता कहती है–

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्।
कारणं गुणसंगोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु।।
(श्रीमद्भगवद् गीता, 13/21)

इसका भावानुवाद है – प्रकृति में स्थित पुरुष ही प्रकृति से उत्पन्न त्रिगुणात्मक पदार्थों को भोगता है और इन गुणों का संग ही इस जीवात्मा के अच्छी–बुरी योनियों में जन्म लेने का कारण है। पुनश्च–

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।।
(श्रीमद्भगवद् गीता, 14/5)

अर्थात हे महाबाहो! प्रकृति से उत्पन्न होनेवाले सत्त्व, रज और तम – ये तीनों गुण अविनाशी देही को देह में बाँध देते हैं। श्रीमद्भागवत पुराणान्तर्गत "हंस गीता" में भी गुणातीत होने की बात कही गयी है–

सत्त्वं रजस्तम इति गुणा बुद्धेर्न चात्मनः।
सत्त्वेनान्यतमौ हन्यात् सत्त्वं सत्त्वेन चैव हि।। (हंस गीता, 1)

अर्थात सत्त्व, रज और तम ये तीनों प्रकृति के गुण हैं, आत्मा के नहीं, सत्त्व के द्वारा रज व तम दो गुणों पर विजय प्राप्त कर लेनी चाहिये। इसके बाद सत्त्व गुण की शांतिवृत्ति द्वारा उसकी दया आदि वृत्तियों को भी शान्त कर देना चाहिए। पुनश्च–

वेणुसंघर्षजो वह्निर्दग्धवा शाम्यति तद्वनम्।
एवं गुणव्यत्ययजो देहः शाम्यति तत्क्रियः।। (वहीं, 7)

अर्थात बाँसों की रगड़ से आग पैदा होती है और वह उनके सारे वन को जलाकर शान्त हो जाती है। वैसे ही यह शरीर गुणों (सत्त्व–रज–तम) के वैषम्य से उत्पन्न हुआ है। विचार द्वारा मंथन करने पर इससे ज्ञानाग्नि प्रज्जवलित होती है और वह समस्त शरीरों एवं गुणों को भस्म करके स्वयं भी शान्त हो जाती है। गुणों के संबंध में भारतीय दार्शनिक चिंतन परंपरा में आद्य मीमांसा सांख्य दर्शन में मिलता है। सांख्य दर्शन के प्रकरण ग्रन्थ "सांख्यकारिका" के कारिकाओं में इसका उल्लेख और उक्त ग्रन्थ के भाष्यों–टीकाओं में विशद विवेचन मिलता है। उक्त दर्शन में त्रिगुण के संबंध में कहा गया है–

त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विरीतस्तथा च पुमान।।

इसका भावानुवाद है – महत् आदि व्यक्त पदार्थ और अव्यक्त रूप मूलकारण प्रकृति तीन गुणों से युक्त, परस्पर अलग होने में असमर्थ, ज्ञान के विषय, अनेक पुरुषों द्वारा ग्रहण किए जाने योग्य, जड़ और उत्पादनशील होते हैं और पुरुष (अन्य दर्शनों में आत्मा नाम से ख्यात) इसके विपरीत गुणों वाला होता है।

उपरोक्त उद्धरणों से यह स्पष्ट हो गया कि जीवात्मा का वास्तविक स्वरूप गुणों से आबद्ध नहीं है, किन्तु वह जब गुणों से आबद्ध अपने को समझता है और उसके प्रभावाभास में कर्म करता है, तो पुनः जन्म आदि के चक्र में चला जाता है। श्वेताश्वेतर उपनिषद् का निम्न सूत्र देखने योग्य है, जिसमें जीव और ब्रह्म की भिन्नता लक्षित की गयी है–

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।।

अर्थात हमेशा आपस में मिलकर रहने वाले दो एक ही नाम वाले अच्छी गतिवाले पक्षी एक ही वृक्ष को आश्रित किए हुए हैं। उनमें एक उसके स्वादिष्ट फलों को भोगता है और दूसरा उन्हें न भोगता हुआ देखता है।

वस्तुतः जीव गुणों के प्रभाव में अविद्या का शिकार हो अविवेकवश वासना रूपी फल का स्वाद लेता है और जन्म–मरण के चक्र में नाना दुःखों को भोगता हुआ चलायमान रहता है, किन्तु परमात्मा नित्य, शुद्ध, बुद्ध और मुक्त स्वरूप है, वह इस संसार को द्रष्टा की भांति देखता है। योगेश्वर श्रीकृष्ण इसलिए ही गुणातीत होने का उपदेश कर रहे कि मनुष्य त्रिविध तापों से तप्त न हो।

करूर जिला (दक्षिण तमिलनाडु) में नए सेवा प्रकल्प का शुभारम्भ

करूर जिला विश्व हिंदू परिषद की ओर से, करूर बस स्टैंड के पास 'नीर मोर पंडाल' का उद्घाटन आज दिनांक 07.05.2024 को 11.00 बजे कुमारन बस सेवा के मालिक श्री सेल्वम द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में राज्य सेवा प्रमुख श्री बालू जी, तिरुपुर विभाग सचिव–ए.सी. विजय जी, जिला अध्यक्ष–श्री मेरिट मुरुगेसन जी, जिला सचिव–श्री ए. कोंगवेल और जिला संघ कार्यकारिणी के पदाधिकारियों ने सहभागिता की।

dheeran.vijay@gmail.com

हिंदू संस्कृति में गुड़ का महत्व और औषधिय लाभ

डॉ. आनंद मोहन
सहयोगी - डॉ. अग्रताबेन वधेल, सबरीन बशीर, डॉ. आकांक्षा शुक्ला, आलोक मोहन

गुड़ दक्षिण एशिया की सांस्कृतिक, धार्मिक और पाक प्रथाओं में विशेष रूप से हिंदू धर्म के भीतर एक गहरा स्थान रखता है। यह एक पारंपरिक मिठास का स्रोत है, जो ऐतिहासिक रूप से दक्षिण एशियाई देशों में इस्तमाल किया जाता है, गुड़ गन्ने के रस से पानी को वाष्पित करके प्राप्त किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप एक प्राकृतिक स्वीटनर प्राप्त होता है, जो दैनिक जीवन और आध्यात्मिक प्रथाओं के विभिन्न पहलुओं में गहराई से अंतर्निहित होता है।

हिंदू धर्म में, गुड़ का उपयोग अक्सर धार्मिक समारोहों और त्योहारों के दौरान देवी–देवताओं के प्रसाद के रूप में किया जाता है। इसका उपयोग शुभ माना जाता है और पवित्रता और अच्छाई का प्रतीक है। गुड़ आधारित मिठाइयाँ, जैसे चक्करा पोंगल, तैयार की जाती हैं और दिवाली, पोंगल और नवरात्रि जैसे महत्वपूर्ण त्योहारों के दौरान देवताओं को प्रस्तुत की जाती हैं। माना जाता है कि ये प्रसाद आशीर्वाद और सकारात्मक ऊर्जा लाते हैं। दक्षिणी भारत, विशेष रूप से तमिलनाडु में, चावल और गुड़ से बना एक व्यंजन जिसे चक्करा पोंगल कहा जाता है, पोंगल के फसल त्योहार के दौरान तैयार किया जाता है और भरपूर फसल के लिए आभार के प्रतीक के रूप में देवताओं को चढ़ाया जाता है। महाराष्ट्र में, मकर संक्रांति के त्योहार के दौरान गुड़ के साथ मिश्रित तिल का आदान–प्रदान किया जाता है। यह प्रथा लोगों के बीच मिठास और सद्भावना साझा करने का प्रतीक है।

गुड़ हिंदू संस्कृति में विभिन्न जीवन घटनाओं और समारोहों का अभिन्न अंग है। संक्रमण और नई शुरुआत को चिह्नित करने के लिए बच्चे के जन्म, शादियों और यहाँ तक कि अंतिम संस्कार के दौरान इसका सेवन और वितरण किया जाता है। उदाहरण के लिए, गुजरात में, गुड़ और धनिया के बीज का मिश्रण जिसे "गौड़ धन" कहा जाता है, अच्छी खबर और शुभ घटनाओं का जश्न मनाने के लिए वितरित किया जाता है। पंजाब में लोहड़ी जैसे उत्सव गुड़ और मूंगफली के साथ चिह्नित किए जाते हैं, जो सर्दियों के अंत और लंबे दिनों के आगमन का प्रतीक है। इस उत्सव के अवसर में अलाव, पारंपरिक गीत और नृत्य शामिल होते हैं, जिसमें गुड़ आधारित मिठाइयाँ केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। कई क्षेत्रों में, नई माताओं को गुड़ दिया जाता है, ताकि बच्चे के जन्म के बाद ठीक हो सके, क्योंकि इसमें आयरन की मात्रा अधिक होती है और इसमें ऊर्जा बढ़ाने वाले गुण होते हैं। इसका उपयोग अंतिम संस्कार के दौरान अनुष्ठानों में भी किया जाता है, ताकि आत्मा की मधुर यात्रा सुनिश्चित किया जा सके।

सांस्कृतिक और पाक महत्व

गुड़ कई पारंपरिक भारतीय मिठाइयों और व्यंजनों में एक प्रधान महत्त्व रखता है। यह न केवल अपनी मिठास के लिए बल्कि अपने समृद्ध, जटिल स्वाद के लिए भी बेशकीमती है, जो विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का स्वाद बढ़ाता है। भारत के प्रत्येक क्षेत्र में अपने विशिष्ट गुड़ आधारित व्यंजन हैं। बंगाल में, पिथे और पतिशप्ता जैसी मिठाइयाँ, ताड़ के गुड़ और नारियल के साथ बनाई जाती है, खासकर पौष संक्रांति के फसल त्योहार के दौरान। गुजरात और महाराष्ट्र में, तिलगुल चिक्की, तिल के बीज और गुड़ से बनी एक भंगुर, उत्तरायण और मकर संक्रांति जैसे त्योहारों के दौरान आनंद से लिया जाता है। एक नई यात्रा, उद्यम या व्यावसायिक प्रयास शुरू करने से पहले, कई हिंदू समुदायों में गुड़ के एक छोटे टुकड़े का सेवन करने की प्रथा है। माना जाता है कि यह सौभाग्य लाता है और सफलता सुनिश्चित करता है।

स्वास्थ्य लाभ और पोषण मूल्य

गुड़ अपने समृद्ध पोषण प्रोफाइल के लिए जाना जाता है, जिसमें लोहा, मैग्नीशियम, पोटैशियम और विटामिन

जैसे आवश्यक खनिज होते हैं। परिष्कृत चीनी के विपरीत, गुड़ अपने प्राकृतिक पोषक तत्वों को बरकरार रखता है, जिससे यह एक स्वस्थ विकल्प बन जाता है। यह विशेष रूप से इसकी उच्च लौह सामग्री के लिए मूल्यवान माना जाता है, जो एनीमिया को रोकने और समग्र ऊर्जा स्तर को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है। इसके अतिरिक्त, गुड़ को लीवर को डिटॉक्स करने और रक्त को शुद्ध करने में सहायता करने के लिए जाना जाता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण : गुड़ का वैज्ञानिक अध्ययन और स्वास्थ्य पर प्रभाव

जीवाणुरोधी गतिविधि : एंटीबायोटिक दवाओं के व्यापक उपयोग के कारण, बैक्टीरिया के विभिन्न उपभेदों का एंटीबायोटिक प्रतिरोध हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप शोधकर्ताओं ने विभिन्न प्राकृतिक रोगाणुरोधी विकल्पों का मूल्यांकन किया है। शोधकर्ताओं ने हल्के गुड़ ब्लॉक, दानेदार चीनी, मस्कोवाडो चीनी, गन्ना, शहद, नियमित गुड़ ब्लॉक और ब्राउन शुगर की एंटीऑक्सीडेंट और रोगाणुरोधी गतिविधि की जांच की। प्रयोग के तहत कैरियोजेनिक बैक्टीरियल उपभेदों स्ट्रेप्टोकोकस म्यूटन्स और एस सोब्रिनस के खिलाफ दानेदार गुड़ की जीवाणुरोधी गतिविधि को चीनी के अन्य सभी रूपों में सबसे अधिक असरदार पाया गया।

एंटीऑक्सिडेंट गतिविधि : मानव शरीर में ऊर्जा उत्पादन की सामान्य प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप मुक्त कण होते हैं, या बहारी कण बन सकते हैं। उन्हें बेअसर करने के लिए, प्राकृतिक एंटीऑक्सिडेंट एक अच्छा विकल्प है। एंटीऑक्सिडेंट के दृष्टिकोण से, गुड़ ने अन्य शुगर की तुलना में मजबूत एंटीऑक्सीडेंट क्षमता प्रस्तुत की, गुड़ ने प्रयोगों में डीएनए सुरक्षात्मक गतिविधि को 70 प्रतिशत तक दिखाया गया है।

साइटोप्रोटेक्टिव गतिविधि : गुड़ बिना किसी विषाक्त प्रभाव के टर्ट–ब्यूटाइल हाइड्रोपेरॉक्साइड–प्रेरित कोशिका मृत्यु के खिलाफ मजबूत साइटोप्रोटेक्टिव प्रभाव दिखाता है। गुड़ का जलीय अर्क चूहों में कार्बन टेट्राक्लोराइड प्रेरित यकृत–गुर्दे की क्षति से भी बचाता है।

कार्डियोप्रोटेक्टिव गतिविधि : अध्ययनों से पता चला है कि गुड़ में कुल कोलेस्ट्रॉल, कम घनत्व वाले लिपोप्रोटीन कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स को कम करके कार्डियोप्रोटेक्टिव प्रभाव ला सकता हैं। गुड़ के सेवन से पोटैशियम का सेवन भी बढ़ जाता है, जो धमनी वासोडिलेशन के माध्यम से रक्तचाप को कम करने में सक्षम होता है, इस प्रकार प्रभावी रूप से रक्तचाप को कम करता है और एथेरोस्क्लेरोसिस, मायोकार्डियल रोधगलन और स्ट्रोक के जोखिम को कम करता है।

सुजन रोधि गतिविधि – गुड़ में एक उच्च आहार फाइबर सामग्री होती है, जो आंतों के पेरिस्टाल्टिक गतिविधि को उत्तेजित करने में मदद करती है, जिससे आंतों के सुजन रोधि प्रभाव होते हैं।

रक्त शर्करा के स्तर का विनियमन – गन्ने के रस में शर्करा के प्रकार के कारण कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स होता है, जो शरीर द्वारा अधिक धीरे–धीरे अवशोषित और संसाधित होता है। जिन लोगों को टाइप 2 मधुमेह नहीं है, उनके लिए यह पेय वास्तव में संयम में सेवन करने पर रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है।

अन्य लाभ – गुड़ को एक अच्छा पाचन उत्तेजक और क्षुधावर्धक पदार्थ माना जाता है, जिसका सेवन आमतौर पर पाचन बढ़ाने के लिए भोजन के बाद किया जाता है। इसके अलावा, यह पोटैशियम सामग्री के कारण शरीर में पानी प्रतिधारण को रोककर वजन घटाने में फायदेमंद हो सकता है। गुड़ को अक्सर विषहरण और मल त्याग को उत्तेजित करने के लिए एक मजबूत घटक माना जाता है और इस प्रकार यह कब्ज को रोकता है। प्राचीन काल से गुड़ का उपयोग अस्थमा, सूखी खांसी और सामान्य सर्दी के इलाज के लिए किया जाता रहा है। हाल के शोध ने गले के कोमल ऊतकों पर सुखदायक प्रभाव के कारण गले की जलन को कम करने के लिए पुरानी खांसी में गुड़ के लाभों की पुष्टि की है। अध्ययनों ने धुएँ और धूल भरे वातावरण में काम करने वाले कर्मचारियों में प्रदूषण के खिलाफ गुड़ के सुरक्षात्मक प्रभाव की सूचना दी है। गुड़ का नियमित सेवन फेफड़ों पर प्रदूषण के हानिकारक प्रभाव को रोकने में मदद करता है। दूसरी ओर, यह फेफड़ों में गर्मी भी पैदा करता है और श्वसन पथ को पतला करता है, और गुड़ के साथ चीनी के सेवन को बदलकर खांसी, अस्थमा और सांस लेने में परेशानी में मदद करता है। गुड़ का उपयोग मैग्नीशियम की मात्रा के आधार पर थकान को रोकने के लिए मांसपेशियों और तंत्रिकाओं की छूट को बढ़ावा देने में मदद करने के लिए किया जाता है। गुड़ का उपयोग सामान्य सर्दी और फ्लू के खिलाफ प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने के लिए भी किया जाता है।

गुड़ हिंदू संस्कृति में सिर्फ एक स्वीटनर से कहीं अधिक है, यह परंपरा, आध्यात्मिकता और स्वास्थ्य का प्रतीक है। धार्मिक प्रसाद, समारोहों और दैनिक जीवन में इसका उपयोग सांस्कृतिक पहचान और निरंतरता को बढ़ावा देने में इसके महत्व को रेखांकित करता है। मंदिर के प्रसाद से लेकर उत्सव के व्यवहार तक, गुड़ हिंदू अनुष्ठानों और रीति–रिवाजों का एक अनिवार्य और पोषित हिस्सा बना हुआ है, जो जीवन के हर पहलू में मिठास, पवित्रता और शुभता का प्रतीक है।

गोंद कतीरा के गुण

कतीरा पेड़ से निकाला जाने वाला गोंद है। इसका कांटेदार पेड़ भारत में गर्म पथरीले क्षेत्रों में पाया जाता है। गोंद कतीरा तासीर में ठंडा है, इसलिए गर्मी में इसका सेवन करें। इसके सेवन से शरीर में ताक़त बनी रहती है, पेशाब में जलन और पेशाब सम्बंधित बीमारी में यह रामबाण की तरह काम करता है गोंद कतीरा का प्रयोग विभिन्न प्रकार के रोगों को दूर करने के लिए किया जाता है।

गोंद कतीरा के गुण

गोंद कतीरा शरीर के खून को गाढ़ा करता है, हृदय की कठोरता को दूर करता है और आंतों की खराश को दूर करके बलवान बनाता है। यह शरीर से निकलने वाले खून को रोकता है, सांस रोग को दूर करता, खांसी को नष्ट करता व कफ दूर करता है। यह छाती की खरखराहट और फेफड़ों के जख्मों को खत्म करता है। इसका प्रयोग जहर को उतारने के लिए भी किया जाता है, विशेषकर गर्म मिजाज वाले व्यक्ति के जहर को। पेशाब की जलन, मासिकस्राव का कम आना, हाथ–पैरों की जलन, सिर की जलन, खुश्की, अधिक प्यास लगना आदि रोग ठीक होते हैं।

शरीर की गर्मी व जलन से छुटी

अगर आपके हाथ–पैरों में जलन की समस्या हो तो 2 चम्मच कतीरा को रात को सोने से पहले 1 गिलास पानी में भिगों दें। सुबह कतीरा के फूल जाने पर इसको शक्कर के साथ मिलाकर रोजाना खाने से हाथों और पैरों की जलन दूर हो जाती है। अगर शरीर अधिक गर्म महसूस हो तो कतीरा को पानी में भिगोकर मिश्री मिले शर्बत के साथ घोटकर सुबह–शाम सेवन करें। इससे शरीर की गर्मी दूर होती है। इसके सेवन करने से गर्मियों में लू से बचा जा सकता है।

स्त्री रोग मे फायदेमंद

कतीरा गोंद का सेवन महिलाओं की समस्याएँ, जैसे बच्चा होने के बाद की कमजोरी, माहवारी की गड़बड़ी या ल्यूकोरिया आदि की समस्या को ठीक करता है। यह कमजोरी और उसके कारण होने वाली शारीरिक अनियमिताओं को ठीक करता है। गोंद कतीरा तथा मिश्र को बराबर की मात्रा में मिलाकर पीस लें और 2 चम्मच की मात्रा में कच्चे दूध के साथ सेवन करें।

स्वप्नदोष

स्वप्नदोष के लिए, करीब ६ ग्राम गोंद कतीरा, रात को एक कप पानी में भिगा दी जाती है। रात भर में यह गोंद फूल जाता है, जिसमें मिश्री १२ ग्राम मिलाकर खाया जाता है। १०–१५ दिन तक इसके सेवन से स्वप्न दोष में लाभ होता है।

पैरों की जलन

गोंद कतीरा रात को एक गिलास पानी में भिगोकर रख दें और सुबह इसमें मिश्री मिलाकर सेवन करें। इससे हाथों–पैरों की जलन दूर होती है। इसका प्रयोग गर्मियों में बहुत ही लाभदायक है।

मूत्ररोग

10 ग्राम से 20 ग्राम गोंद कतीरा सुबह शाम फुलाकर मिश्री के साथ शर्बत घोटकर पीने से मूत्ररोग में लाभ मिलता है। कोई भी औषधि अपने वैद्य के परामर्श से हीं लें।

पुण्यश्लोका अहिल्या देवी होल्कर के त्रिशताब्दी समारोह के अवसर पर विहिप द्वारा व्याख्यान

जलगाँव। इस वर्ष पुण्यश्लोका अहिल्या देवी होल्कर के 300वें पुण्यस्मरण उत्सव के उपलक्ष्य में जलगांव महानगर द्वारा केमिस्ट भवन में एक व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में अखिल भारतीय सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपांडे उपस्थित थे। विनायकराव देशपांडे ने अपने व्याख्यान में अहिल्या देवी होल्कर की पूरी जीवनी को बहुत ही सरल और आसान भाषा में प्रस्तुत किया। उन्होंने अहिल्या देवी के जीवन के संघर्ष के साथ–साथ पहले के समय में किये गये महिला सशक्तिकरण को भी बहुत अच्छे शब्दों में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि अहिल्या माता एक उत्कृष्ट शासक, महिला थीं और उन्होंने पूरे भारत में सैकड़ों हिंदू मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया और गाँवों में महिलाओं को सशक्त बनाया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुभाष सोनवणे ने की। सोनवणे पुण्यश्लोका अहिल्या देवी होल्कर प्रतिष्ठान के कोषाध्यक्ष हैं, जो अहिल्या देवी होल्कर की जन्मस्थली, जामखेड़ जिला नगर के चोंडी तालुका में बनाया गया है। उन्होंने अपने भाषण में विश्व हिंदू परिषद को विशेष रूप से बधाई दी। उक्त कार्यक्रम की प्रस्तावना स्वागत सुश्री शिल्पा रावेरकर एवं परिचय श्री भूषण क्षत्रिय तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री पवन झुंझरराव ने किया। उक्त कार्यक्रम में डॉ. कुमारी विजयताई पांडे, श्री राज महाजन, श्री संजय व्यास, श्री आनंद मुकुंद एवं विश्व हिंदू परिषद जिला अध्यक्ष हरीश भाई मुंदड़ा, महानगर अध्यक्ष डॉ. मनीष चौधरी और शहर विधायक राजू मामा भोले सहित शहर के विभिन्न क्षेत्रों के जाने–माने संगठन से जुड़े लोग, विश्व हिंदू परिषद के प्रांत संगठन मंत्री श्री गणेश मोकाशे, विभाग संयुक्त मंत्री श्री देवेन्द्र भावसार, विभाग संयोजक श्री राकेश लोहार, जिला संयुक्त मंत्री राजेंद्र गांगुर्डे, भरत कोली, यश पांडे, ललित खड़के, मनोज बाविस्कर, दीपक दाभाड़े उपस्थित रहे।

हिन्दू समाज पर हो रहा आक्रमण

– पवन त्रिपाठी

आपको पता है कि पाकिस्तान और बाँग्लादेश, अफगानिस्तान में कौन सी जातियाँ बच रही हैं? यह पिछड़ी जातियाँ हैं, यह एससी–एसटी जातियाँ हैं। वे वहाँ से भाग कर आ नहीं पाई। सोंचा शायद.! अन्य सो–काल्ड अगड़ी जातियाँ वहाँ से किसी तरह निकल आई, सुरक्षित इलाके में, अपने हिंदू राष्ट्र में, पर अति–पिछड़े वहीं रुक गए। उनके पास आने का कोई तरीका नहीं था। अब जो वहाँ पर हैं, उनकी परिस्थितियों का पता करिए जरा!

मुसलमान भारत में दलित के साथ गठजोड़ का पैतरा चलता है, उनसे राजनीतिक हित की बात करता है दलित–मुसलिम एकता की बात करता है, अगड़े–पिछड़े की बात करता है, लेकिन जब वहाँ देखेंगे, पाक में या बाँग्लादेश में, तो वहाँ इस कदर उन्हें परेशान किया जाता है, इस कदर उन्हें कम किया गया है कि मानवता शर्मसार हो जाये। बाँग्लादेश में 68 वर्ष में 52 प्रतिशत से घटते–घटते प्रतिशत 8 बचे हैं...सब दलित थे। किसी तरह जी रहे हैं। समझने के लिए यही काफी है। हमारे अंदर का वंचित–समाज उनका "चारा है। सो काल्ड "भाई का चारा"।

आज आजादी के बाद वह आवरण जहरीले मतभेदों में बदल चुका है। सरकार की नीतियाँ तो घातक है ही, अब टीवी, समाज के अन्य कार्यक्रम, लोगों के व्यवहार, चुनावी गणित, आंतरिक कुटिलता, व्यवसायिक चालें, स्थानीय विषमताएँ, सब उसे बढ़ा ही रही हैं। भारत में विभाजनकारी नीति के तौर पर अपनाया जा रहा है। वह हमारी कमजोरी बन चुका है। एक ऐसी कमजोरी, जिसका नियंत्रण विदेशियों के हाथों में है। दुश्मनों के हाथों में है। बहुत सारे ऐसे स्वार्थी नेता भी खड़े हुए हैं, जिन्होंने समाज में विभाजन को मजबूती प्रदान किया है। वह देखते हैं कि उनका उसमें ही लाभ है। भले ही समाज को विनाशकारी घाटा है। उनका वह निहित स्वार्थ–लाभ जाति के अन्य लोगों के लिए नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत है। इससे कभी जातियों के अन्य आंतरिक लोगों का विकास नहीं हुआ करता। जो गरीब था वह गरीब ही रह गया है। उनका विकास नहीं हुआ। हाँ! नेताओं का विकास हुआ है। कुछ लोगों का विकास हुआ है। कुछ कॉरपोरेट का विकास हुआ है। क्रीमीलेयर बना है। वह खुद अपने जातीय–समाज का उच्च – वर्ग बन चुका है। उस छोटे समुदाय और जाति को तो नुकसान ही पहुँचा रहा है, साथ ही सनातन युग–युगीन धर्म के लिए लिए बहुत ज्यादा घातक सिद्ध हो रहा है। इसके कारण हिंदू बहुत तेजी से घटता जा रहा है। यह घटते–घटते जगह – जगह संख्यात्मक अनुपात इस तरह से नजदीक हो गई है, इस तरह से कम हो गई है कि कोई लड़ने वाला ही नहीं बचा। पाक ले लिया, बाँग्लादेश ले लिया, अब कुछ जमीन और तैयार है। वे एससी, एसटी जातियों को निशाने पर रखते हैं। कहीं सेवा, कहीं लालच, कहीं अभाव, कहीं दूरी दिखाकर धर्मांतरण करते हैं। कई जगह उन्हें इसमें सफलता मिलती है। देश बंट रहा...कहीं इसाई तो कहीं कसाई।

हम आगे नहीं आते, हम अपने अंदर की जातीयता को खत्म नहीं करते, हम युग–युगीन सनातन को नहीं बचाना चाहते, हम तो दुश्मनों की बनाई छोटी–छोटी जातियों को पकड़ कर बैठे हुए हैं... हमारे नेता भी निहित स्वार्थ में उसे बढावा देते हैं। यह सब हमें कमजोर कर रही, हमें हरा रहीं, नष्ट कर रही हैं, हमारी शक्ति को समाप्त कर रही हैं, वह छोटे टुकड़े कर देती है, हमारी राष्ट्र–शक्ति समाप्त होने लगती है। हमें इस जातीयता को खत्म करना पड़ेगा, हमें उस हथियार को नष्ट/खत्म करना पड़ेगा, सभी जातियों से कुछ समझदार लोगों को आगे आना पड़ेगा। तब हम जीत सकेंगे। हम अपने लोगों को सुख के उच्चतम–शिखर पर पहुँचा सकेंगे। तब हम परम्–वैभव के स्थान पर पहुँच सकेंगे। विश्वगुरु के स्थान पर पहुँच सकेंगे।

अगर नहीं समझेंगे, तो आपका मूलाधार खतरे में है। आप मार्क्सिस्ट इतिहासकार, कम्युनिस्ट इतिहासकार, कांग्रेसी इतिहासकार, मुसलमान इतिहासकार और ईसाई इतिहासकारों, की साजिशों को ठीक से समझ लीजिए। उनके पत्रकारों, उनके लेखकों, मीडिया मुगलों, नैनों मीडिया–पर्सनालिटीज के एजेंडे को समझिए। वे क्यों बार–बार कास्ट–सिस्टम पर जोर देते हैं–बढावा देते हैं।

भारत में राजनीतिक दशा और लोकतंत्र का लाभ उठाया जाता है। अगर प्रेम है, तो वहाँ दलित–मुस्लिम करो। थोड़ी धर्मनिरपेक्षता की बात करो। आप वहाँ खड़े किये जाते हैं, जहाँ आपके लोग नही हैं, उनकी सेवा की जगह, उनसे विघटन के साथ, यानी आप शक्ति के सर्वोच्च पर पहुँचने से आपको रोकने के तत्व आप में डाले गए हैं। भारत में यह विभाजन, यह कमजोरी उनके लिए लाभप्रद होती है। वह हिंदुओं को एक नहीं होने देना चाहते हैं। जैसे ही कोई राष्ट्रीय मुद्दा उठता है, बड़ा साँस्कृतिक या एजुकेशन सुधार, धारा 370, कॉमन सिविल कोड, आर्थिक या बचाव की रणनीतियाँ, आतंकवाद, दुश्मन देशों पर, यहाँ तक कि बाँग्लादेशियों को बाहर करने के मुद्दे पर भी वे तुरंत कोशिश करते हैं कि चीजें जातिवाद की तरफ मुड़ जाएँ। बुनियादी तौर पर देश के छोटे–छोटे टुकड़ों में हर तरफ तरह–तरह के जाति के नेता, खड़े हो गए हैं। वोट की राजनीति के लिये, वोट प्राप्ति करने के उद्देश्य से उनका साथ देने लगते हैं। उनके एजेंडे पर एक एजेंट के तौर पर उपस्थित हो जाते हैं। यह हमारे समाज को कमजोर करता है और दूरगामी परिणाम को प्रभावित करता है, विकास तो लगभग रुक ही जाता है। समाज का सांगठनिक ढाँचा खत्म ही हो जाता है।

यह भारतीय समाज के लिए, आर्यों के समाज के लिए खतरनाक वैपन की तरह इस्तेमाल हो रहा है। हमारे अस्तित्व के लिए खतरा बन चुका है। हमें और हमारे हिन्दू समाज को इस हथियार का तोड़ खुद निकालना होगा, नहीं तो सैम्युअल टी हन्टिगंटन की बात सही साबित होगी। वे आपको राजनीतिक तरीके से अलग करेंगे फिर धीरे से पचा लेंगे। इस सबसे खौफनाक पुराने हथियार को पहचान कर, बचाव ढूँढ़ लेंगे, तो बच सकते हैं।

विश्व हिन्दू परिषद की युवा शाखा बजरंग दल का शौर्य प्रशिक्षण वर्ग

बजरंग दल किसी भी समय होने वाले प्रत्येक घात–प्रतिघात का समुचित प्रतिकार करने की प्रेरणा समाज के अंदर देने का काम करता है : रविदेव आनंद

हरिद्वार, 28 मई 2024। विश्व हिन्दू परिषद की युवा शाखा बजरंग दल का आठ दिवसीय शौर्य प्रशिक्षण वर्ग गुरुकुल महाविद्यालय के प्रांगण में 24 मई से 31 मई तक आयोजित किया जा रहा है। बजरंग दल के शौर्य प्रशिक्षण वर्ग में आज विश्व हिन्दू परिषद के प्रांत अध्यक्ष रविदेव आनंद ने बजरंग दल की स्थापना, उद्देश्य और उपलब्धियाँ विषय पर युवा शिक्षार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि 8 अक्टूबर सन 1984 को बजरंग दल का जन्म श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन से हुआ था। संघर्ष से जन्म लेकर हिंदुत्व, गौरक्षा, हिन्दू कन्या, मठ मन्दिर, साधु–संतों की रक्षा के लिए सतत संघर्ष का संकल्प लेकर हिन्दू समाज को सेवा, सुरक्षा, संस्कार के माध्यम से संगठित कर राष्ट्रीय विचारों का प्रबोधन कर युवा शक्ति को खड़ा करना बजरंग दल का कार्य है। युवाओं में सामाजिक सँस्कारों के साथ–साथ राष्ट्रभक्ति का जागरण करने का काम बजरंग दल के माध्यम से किया जाता है। रक्तदान शिविर, आपदा प्रबंधन, कौशल विकास, व्यक्तित्व विकास, धर्म जागरण हेतु मठ–मंदिरों में सत्संग, जागरण, श्रीहनुमान चालीसा एवं सुन्दर काण्ड पाठ का आयोजन इत्यादि बहुत से रचनात्मक कार्यों द्वारा बजरंग दल सेवा कार्यों में अपना योगदान समाज को दे रहा है। अपने देश एवं राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति निष्ठावान ये बजरंगी देश और समाज में प्रतिरोधक क्षमता को विकसित करने में संलग्न है, जो असमय होने वाले प्रत्येक घात–प्रतिघात का समुचित प्रतिकार करने की प्रेरणा समाज के अंदर देने का काम करते हैं।

हिन्दू युवा हिन्दू मानबिन्दुओं का अपमान नहीं सह सकता, चाहे कितना भी बलिदान देना पड़े : अनुज वालिया

वर्ग में युवा बजरंगियों को राष्ट्रभक्ति और देवभक्ति के प्रति समर्पण की शिक्षा देते हुए बजरंग दल के प्रांत संयोजक अनुज वालिया ने कहा कि इस राष्ट्र मंदिर के सजग प्रहरी बजरंग दल के कार्यकर्ताओं के अनथक सामाजिक कार्यों एवं अन्यान्य प्रयासों की जितनी भी सराहना की जाए कम है। बजरंग दल किसी के विरोध में नहीं बल्कि हिन्दूओं को चुनौती देने वाले असमाजिक तत्वों से रक्षा के लिए है। उस समय केवल स्थानीय युवाओं को ही दायित्व दिया गया, जो श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन के कार्यो में सक्रिय रह सके। देश भर के युवा राष्ट्र और धर्म के कार्य के लिए आतुर थे, माने वह प्रतीक्षा ही कर रहे थे, जैसे ही अवसर आया 'सम्पूर्ण देश की राष्ट्रभक्त तरूणाई बजरंग दल के रूप में प्रकट हो गयी।'

बजरंग ढल रामजी के कार्य के लिए जन्मा और रामजी के कार्य में निरंतर प्रयासरत है : अजय कुमार

विश्व हिन्दू परिषद के प्रांत संगठन मंत्री अजय कुमार ने कहा कि सन 1993 में बजरंग दल का अखिल भारतीय संगठनात्मक स्वरूप तय हुआ। सभी प्रान्तों में बजरंग दल की इकाई घोषित हो गयी, आज देश भर में बजरंग दल सक्रिय है। जिस प्रकार राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ में शाखाएँ संचालित होती हैं, उसी प्रकार बजरंग दल भी बलोपासना केन्द्र, अखाड़े और साप्ताहिक मिलन संचालित करता है, जो बजरंग दल के कार्य का आधार माना जाता है। 'बजरंग दल मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्र जी के कार्य के लिए जन्मा और प्रभु श्रीराम के कार्य में निरंतर प्रयासरत है।'

भारत को समृद्ध, शक्तिशाली राष्ट्र का लक्ष्य प्राप्त कराने की दिशा में आगे बढ़ाना ही हमारी नियति है, जिसे पुरुषार्थ से प्राप्त करना है : अजय कुमार

29 मई को 'अखण्ड भारत' विषय पर संबोधित करते हुए विश्व हिन्दू परिषद के प्रांत संगठन मंत्री अजय कुमार ने कहा कि पृथ्वी का जब जल और थल इन दो तत्वों में वर्गीकरण करते हैं, तब सात द्वीप एवं सात महासमुद्र माने जाते हैं। हम इसमें से प्राचीन जम्बूद्वीप जिसे आज एशिया द्वीप कहते हैं तथा इन्दू सरोवरम जिसे आज हिन्द महासागर कहते हैं, के निवासी हैं। भारत की सीमाओं का उत्तर में हिमालय व दक्षिण में हिंद महासागर का वर्णन है, परंतु पूर्व व पश्चिम का वर्णन नहीं है। गहराई से अध्ययन करने पर शास्त्रों में पूर्व व पश्चिम दिशा का वर्णन है। कैलाश मानसरोवर से पूर्व की ओर जाएँ, तो वर्तमान का इंडोनेशिया और पश्चिम की ओर जाएँ, तो वर्तमान में ईरान देश या आर्यान प्रदेश हिमालय के अंतिम छोर पर है। एटलस के अनुसार जब हम

श्रीलंका या कन्याकुमारी से पूर्व व पश्चिम की ओर देखेंगे, तो हिंद महासागर इंडोनेशिया व ईरान तक ही है। इन मिलन बिंदुओं के बाद ही दोनों ओर महासागर का नाम बदलता है, इस प्रकार से हिमालय, हिंद महासागर, आर्यान, ईरान व इंडोनेशिया के बीच का पूरे भू भाग को आर्यावर्त अथवा भारतवर्ष या हिंदुस्तान कहा जाता है। विश्व के देशों की सूची में वर्तमान भारत के चारों और जो देश माने जाते हैं, उस समय ये देश थे ही नहीं, यहाँ भारतीय राजाओं का शासन था। इन सभी राज्यों की भाषा में अधिकांश शब्द संस्कृत के ही हैं, मान्यताएँ व परंपराएँ सब भारत जैसी ही हैं। खान–पान, भाषा–बोली, वेशभूषा, संगीत–नृत्य, पूजापाठ, के तरीके सब एक से थे। जैसे–जैसे इनमें से कुछ राज्यों में भारत के इतर यानि विदेशी मजहब आए, तब यहाँ की सँस्कृति बदलने लगी। इतिहास की पुस्तकों में पिछले 2500 वर्ष में जो भी आक्रमण हुए यूनानी, यवन, हूण, शक, कुषाण, सिरियन, पुर्तगाली, फ्रेंच, डच, अरब, तुर्क, तातार, मुगल व अँग्रेज इन सभी ने हिंदुस्तान पर आक्रमण किया, ऐसा इतिहासकारों ने अपनी पुस्तकों में कहा है। किसी ने भी अफगानिस्तान, म्यांमार, श्रीलंका, नेपाल, तिब्बत, भूटान, पाकिस्तान, मालद्वीप या बाँग्लादेश पर आक्रमण का उल्लेख नहीं किया है।

अखंड भारत का संकल्प एक विचार नहीं वरन अडिग संकल्प है, सदा प्रेरणा देने वाला स्वप्न है। महर्षि अरविन्द ने कहा था 'नियति ने भारत को एक राष्ट्र के रूप में बनाया है, यह विभाजन अस्थायी है। देश के नागरिकों को संकल्प लेना चाहिए कि चाहे जैसे भी हो और कोई भी रास्ता क्यों न अपनाना पड़े, अब विभाजन को समाप्त कर पुनः अखंड भारत का निर्माण होना ही चाहिए।'

संविधान बदलने और आरक्षण खत्म करने की बात कर विपक्ष फैला रहा भ्रम–आलोक कुमार

हरिद्वार, 31 मई। विश्व हिंदू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार ने कहा कि लोकसभा चुनाव में संविधान बदलने का जो मुद्दा विपक्ष द्वारा उठाया जा रहा है। वह पूरी तरह झूठ है। संविधान बदलने जैसी कोई बात नहीं है। इससे बड़ा कोई झूठ नहीं है। गुरूकुल महाविद्यालय में आयोजित बजरंग दल के प्रशिक्षण वर्ग के समापन के दौरान पत्रकारों से वार्ता करते हुए आलोक कुमार ने कहा कि संविधान बदलने और आरक्षण खत्म करने जैसे मुद्दे उठाकर विपक्ष भ्रम फैला रहा है और समाज को बांटने का प्रयास कर रहा है। उन्होंने कहा कि विहिप का स्पष्ट मत है कि आरक्षण तब तक चलना चाहिए, जब तक समाज में समानता नहीं आ जाती। जब अनुसूचित समाज स्वयं कहे कि समाज में व्याप्त असमानता समाप्त हो चुकी है, तो इस पर विचार किया जाना चाहिए।

अयोध्या राममंदिर के संबंध में विहिप अध्यक्ष ने कहा कि मंदिर की पहली मंजिल पर महर्षि वाल्मीकि, माता शबरी, जटायु, वशिष्ठ और विश्वामित्र की मूर्तियाँ स्थापित करने का काम चल रहा है, जो कि इस वर्ष के अंत तक पूरा कर लिया जाएगा। काशी–मथुरा के सवाल पर उन्होंने कहा कि सरकार पक्ष में है। इसलिए किसी आंदोलन की जरूरत नहीं है। मामला न्यायालय में विचाराधीन है। हमारे तथ्य और तर्क मजबूत हैं। फैसला हिंदू समाज के पक्ष में आने की पूरी उम्मीद है। हाल ही में आयी देश में मुस्लिम आबादी बढ़ने और हिंदू आबादी घटने की रिपोर्ट पर उन्होंने कहा कि जनसांख्यिकी संतुलन बनाए जाने की आवश्यकता है। हिंदू समाज को कम से कम दो बच्चे पैदा करने के लिए जागरूक किया जाएगा। 24 मई से शुरू हुए बजरंग दल के प्रशिक्षण वर्ग में 23 सांगठनिक जिलों के 122 प्रशिक्षणार्थियों को संगठन की रीति नीतियों का प्रशिक्षण दिया गया।

pankajvhpharidwar108@gmail.com

भारत का बंटवारा केवल राजनीतिक, संगठित हिन्दू संकल्प शक्ति से पुनः बनेगा अखण्ड भारत : गजेन्द्र जी

कानपुर, 31 मई 2024। विश्व हिन्दू परिषद् कानपुर प्रान्त की युवा शाखा बजरंग दल द्वारा सेठ मोतीलाल खेड़िया सनातन धर्म इण्टर कॉलेज में चल रहे प्रांतीय शौर्य प्रशिक्षण वर्ग में देश–धर्म–सँस्कृति–जीवन मूल्यों की रक्षा हेतु आए हुए संकल्पित युवाओं को संबोधित करते हुए विहिप क्षेत्र संगठन मंत्री श्री गजेन्द्र जी ने कहा कि कालांतर में हमारे देश के 24 हिस्से हुए, कभी 83 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला भारत आज मात्र 33 लाख वर्ग किलोमीटर रह गया। ईरान से लेकर इंडोनेशिया तक फैले भारतवर्ष के समय–समय पर अनेकों टुकड़े किए जाते रहे। साँस्कृतिक विरासत को छिन्न–भिन्न किया जाता रहा। अफगानिस्तान, तिब्बत, कैलाश मानसरोवर, नेपाल, श्रीलंका, बर्मा, पाकिस्तान, बाँग्लादेश, इंडोनेशिया और साँस्कृतिक रूप से जावा, सुमात्रा, वियतनाम भारतवर्ष के ही अंग हैं। 1947 में एक कमरे में बैठकर नेहरू जिन्ना और माउंटबेटन समेत 5–6 लोगों ने कागजों पर लकीरें खींच कर भारत से पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान अलग कर दिया। विस्थापन में 20 लाख हिंदुओं का कत्लेआम हुआ।

हमें यहूदियों से प्रेरणा लेनी चाहिए, यहूदी सैकड़ों वर्षों तक 'अगले साल यरुशलम में' का संकल्प आपस में दोहराते रहे, ईसाइयों और इस्लाम से इतने संघर्षों, अत्याचारों, होलोकास्ट के बावजूद उन्होंने अपना देश इजरायल प्राप्त किया, बर्लिन की दीवार भी टूटी। इसी तरह भारत का विभाजन भी महज राजनीतिक स्थिति मात्र है, यह स्थाई नहीं है। आने वाले भविष्य में संगठित हिन्दू संकल्प शक्ति से पुनः अखण्ड भारत का उद्देश्य प्राप्त होगा। हमें स्वयं तथा अपनी आने वाली पीढ़ियों को अपना वैदिक संकल्प 'जंबूद्वीपे भारतखंडे आर्याव्रत देशांतर्गते, अमुक स्थाने, अमुक नामे, अमुक गोत्रे, अमुक तीथौ' याद रखना रहेगा। निरंतर इसका स्मरण करना होगा। हमें बस दृढ़ इच्छाशक्ति की आवश्यकता है, जिससे अखण्ड भारत का संकल्प पूर्ण होगा।

बजरंग दल ने किया शौर्य पथ संचलन

विहिप क्षेत्र संगठन मंत्री श्री गजेन्द्र जी, प्रान्त अध्यक्ष श्री राजीव महाना जी, प्रान्त कार्याध्यक्ष डा. उमेश पालीवाल जी ने भगवा ध्वज प्रान्त सह संयोजक शुभम कौशिक जी को देकर पथ संचलन का श्रीगणेश किया। बजरंग दल प्रांत संयोजक आचार्य अजीतराज जी के नेतृत्व में बजरंगियों द्वारा आज पूर्ण गणवेश में वाहिनी समेत पथ संचलन किया गया। सबसे आगे विशाल भगवा ध्वज उसके पीछे श्रीराम दरबार तत्पश्चात घोड़े पर सवार वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप तथा छत्रपति शिवाजी महाराज तत्पश्चात रथ में विराजमान भारत माता, उनका अनुगमन करते हुए वाहिनी प्रमुखों के नेतृत्व में सैकड़ों गणवेषधारी बजरंगी हाथों में भगवा ध्वज लिए हुए राष्ट्र मंगल के संकल्प के साथ चल रहे थे। पथ संचलन कमलेश्वरम गेस्ट हाउस से चलकर छपेड़ा पुलिया, हरी गर्ल्स हास्टल, भदौरिया चौराहा से बदनाम चाय होते हुए कमलेश्वरम गेस्ट हाउस पहुंच कर संपन्न हुआ।

kanpur.vhp@gmail.com

कोल्हापुर (प. महाराष्ट्र) में नगर के प्रतिष्ठित जनों के संवाद कार्यक्रम को सम्बोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

सूरत में पुण्य श्लोका अहिल्या देवी होलकर जी की 300वीं जन्म जयंती पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपाण्डे तथा कार्यक्रम में उपस्थित आम जनमानस

कानपुर में बजरंग दल शौर्य प्रशिक्षण वर्ग के पश्चात विहिप क्षेत्र संगठन मंत्री श्री गजेन्द्र जी, प्रान्त अध्यक्ष श्री राजीव महाना जी, प्रान्त कार्याध्यक्ष डा. उमेश पालीवाल जी ने भगवा ध्वज प्रदान कर पथ संचलन का शुभारंभ किया।

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 13.06.2024
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

हरिद्वार में बजरंग दल के शौर्य प्रशिक्षण वर्ग के समापन अवसर पर
प्रशिक्षार्थियों को सम्बोधित करते विहिप अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आलोक कुमार जी

पुणे (पश्चिम महाराष्ट्र) में मुम्बई क्षेत्र के परिषद शिक्षा वर्ग को सम्बोधित करते विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे

रतलाम में मालवा प्रांत के परिषद शिक्षा वर्ग को सम्बोधित करते विहिप सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपाण्डे

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी-82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस-1, नई दिल्ली-110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी